स्वराज्य और जैन महिलाएँ

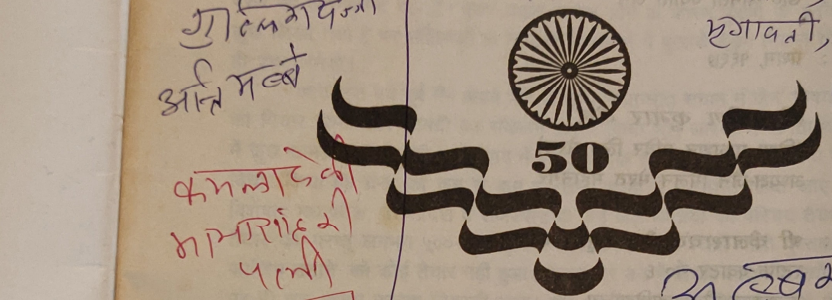

डॉ० श्रीमती ज्योति जैन

श्री कैलाशचंद जैन स्मृति न्यास,
खतौली-२५१२०१ (उ०प्र०)

आजादी की स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष्य में प्रकाशित
स्वराज्य और जैन महिलाएँ

लेखिका : डॉ० श्रीमती ज्योति जैन

© : डॉ० श्रीमती ज्योति जैन

संस्करण : प्रथम, १९९७

प्रकाशनार्थ अर्थसहयोग : श्री प्रवीण कुमार जैन
(विद्या प्रकाशन मंदिर लि० मेरठ)
अध्यक्ष-जैन मिलन मेरठ महानगर

प्रकाशक : श्री कैलाशचंद जैन स्मृति न्यास
स्टाफ क्वाटर नं० ६
कुन्दकुन्द जैन महाविद्यालय
खतौली–२५१२०१ (मुजफ्फरनगर) उ०प्र०
फोन : ०१३९६–७३३३६

प्राप्ति-स्थान : (१) जैन बुक एजेन्सी
सी–६, कनॉट प्लेस
नई दिल्ली – ११०००१
फोन – ०११–३३२०८०६, ३३५५९८६

मूल्य : २५/– मात्र

आवरण : अमित भारद्वाज, मुजफ्फरनगर

लेजर सेटिंग : देव प्रिण्टर्स
५६, पटेल नगर, मुजफ्फरनगर
फोन : (०१३१) ४०४५५७

अपनी बात

'स्वराज्य और जैन महिलाएँ' पुस्तक आपके हाथों में सौंपते हुए मुझे हार्दिक तोष और अपरिमित सन्तोष का अनुभव हो रहा है। यह और भी प्रसन्नता की बात है कि इसका प्रकाशन आजादी की स्वर्ण जयन्ती वर्ष में हो रहा है। भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में पुरुषों और महिलाओं की भूमिका समान रूप से रही है परन्तु पुरुषों ने जहाँ आन्दोलन में प्रत्यक्ष रूप से भाग लेकर कुर्बानियाँ दीं तथा जेल की दारुण यातनाएँ सहीं, वहीं महिलाओं ने पुरुषों को प्रेरणा देकर तथा उन्हें घर-परिवार की चिन्ताओं से मुक्त कर, अप्रत्यक्ष रूप से अपनी सहभागिता निभाई। भारतीय समाज में स्त्री सदैव पुरुष की अनुगामिनी रही है। पुरुष प्रधान समाज होने के कारण पुरुषों के अवदान पर तो बहुत कुछ लिखा गया है पर महिलाओं के अवदान के सन्दर्भ में पुस्तकें ढूँढने निकलें तो एक-दो पुस्तकें ही हाथ लगेंगी।

आठ-दस वर्ष पूर्व मैंने अपने पति के साथ 'स्वतन्त्रता सग्राम में जैन' विषय पर कुछ लिखने का विचार किया और सामग्री का संकलन प्रारम्भ किया था। आरम्भ में लगता था कि इस विषय में कुछ सामग्री नहीं मिलेगी परन्तु बाद में इतनी अभ्रिक सामग्री मिली कि समेटना भारी पड़ने लगा। विचार किया कि ग्रन्थ को कम से कम दो/तीन खण्डों में प्रकाशित किया जाए। प्रथम खण्ड में विशेषतः मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश व राजस्थान के जैन जेल यात्रियों का परिचय तैयार कर प्रेस कापी तैयार की, परन्तु लगभग ५००-६०० पृष्ठीय और लगभग ३०० चित्रों वाली पुस्तक के प्रकाशन का जोखिम उठाने को कोई तैयार नहीं हुआ। फलतः मेरे मन में विचार आया कि क्यों न जैन महिलाओं पर ही एक अलग पुस्तक निकाली जाए। मूल भावना यही रही कि महिलाओं के भीतर का हीन भाव छँटे, जैसा कि प्रसिद्ध लेखिका आशा रानी व्होरा ने 'महिलाएँ और स्वराज्य' की भूमिका में लिखा है- 'महिला-उपलब्धियों को खोज-खोजकर सामने लाने का मेरा उद्देश्य बस इतना भर रहा है कि हम स्त्रियों के भीतर का हीन-भाव छँटे, हम में नव-निर्माण के लिए नया विश्वास जागे।

परम पूज्य दिगम्बर जैनाचार्य आचार्य विद्यासागर जी महाराज, उपाध्याय ज्ञानसागर जी महाराज, पूज्य ऐलक अभय सागर जी महाराज, क्षुल्लक धैर्य सागर जी महाराज का आशीर्वाद और प्रेरणा मुझे सदैव प्राप्त होती रही है, उनके श्री चरणों में कोटिशः नमोऽस्तु-वन्दन। भाई सा० डॉ० रमेशचंद जी, डॉ० श्रेयांश कुमार जी, डॉ० जयकुमार जी से समय-समय पर परामर्श मिलता रहा है अतः उनकी आभारी हूँ। जिन उदारचेता सज्जनों ने सामग्री भेजकर उपकृत किया है और जिनकी पुस्तकों से यह पुस्तक तैयार हुई है, उनके प्रति कृतज्ञ हूँ। पुस्तक में त्रुटियाँ हैं व अनेक जैन महिलाओं के अवदान को मैं रेखांकित नहीं कर सकी हूँ। पाठक सामग्री भेजेंगे तो आगामी संस्करण में उसे समायोजित कर सकूँगी। यह पुस्तक तमाम ज्ञात-अज्ञात स्वतन्त्रता सेनानियों को स्वर्ण-जयन्ती के अवसर पर मेरी विनयाञ्जलि मात्र है।

ज्योति जैन
एम०ए०, पी-एच० डी० (राजनीति विज्ञान)

प्राक्कथन

डॉ० कपूरचंद जैन
अध्यक्ष संस्कृत विभाग,
श्री कुन्दकुन्द जैन पी०जी० कालेज,
खतौली-२५१२०१ (उ०प्र०)

मानव-संस्कृति के समुन्नयन में जिन महापुरुषों का महनीय योगदान रहा है, उनमें तीर्थंकर ऋषभदेव अग्रगण्य हैं। श्रीमद्भागवत केअनुसार ब्रह्मा जी ने सृष्टि हेतु मनु और सत्यरूपा को उत्पन्न किया, उनसे प्रियव्रत नाम का पुत्र पैदा हुआ। प्रियव्रत का पुत्र आग्नीन्ध्र हुआ और आग्नीन्ध्र के घर नाभि ने जन्म लिया। नाभि ने मरुदेवी से विवाह किया और उनसे ऋषभदेव उत्पन्न हुए। लिङ्गपुराण, वायुपुराण, गरुड़पुराण, विष्णुपुराण, ब्रह्माण्डपुराण, वाराहपुराण, कूर्मपुराण, मार्कण्डेय–पुराण आदि पुराणों के अनुसार इन्हीं ऋषभदेव के पुत्र भरत के नाम पर हमारे देश का नाम भारतवर्ष पड़ा। ऋषभदेव ने असि (तलवार), मसि (लेखनकला), कृषि (खेती), विद्या (लिपि और अंकज्ञान), शिल्प (विभिन्न कलाएँ), वाणिज्य (व्यापार) इन छह कार्यों का उपदेश देकर मनुष्य को कर्म करने की प्रेरणा दी। यहीं से मानव समाज में राज्य, समाज, धर्म, अर्थ, परिवार आदि संस्थाओं का विधिवत् विकास मानना चाहिए।

विश्व की प्राचीनतम लिपि ब्राह्मी है, जिसकी उत्पत्ति के सन्दर्भ में लिखा गया है कि एक समय ऋषभदेव की ब्राह्मी और सुन्दरी दोनों पुत्रियाँ उनके पास बैठीं थीं। ब्राह्मी दाहिनी ओर और सुन्दरी बायीं ओर थी। ऋषभदेव ने ब्राह्मी को वर्णमाला का बोध कराया अतः लिपि बायीं से दायीं और लिखी जाती है, ब्राह्मी के नाम पर ही प्राचीन लिपि का नाम 'ब्राह्मी' पड़ा। सुन्दरी को ऋषभदेव ने अंकविद्या सिखाई थी अतः अंक दायीं से बायीं ओर इकाई दहाई के रूप में पढ़े जाते हैं।

'अहिंसक युद्ध' परस्पर विरोधी बात लगती है यह, पर इतिहास में एक ऐसा भी युद्ध हुआ जो पूर्णतः अहिंसक था। ऋषभदेव वैराग्य धारण कर जब तपस्यार्थ वन चले गये तब उनके दो पुत्रों भरत और बाहुबली के बीच राज्य विस्तार की सीमा को लेकर युद्ध की तैयारियां होने लगीं। दोनों ओर की सेनाएँ आमने-सामने खड़ी हो गईं। तब दोनों पक्षों के मंत्रियों ने परस्पर विचार किया कि ये दोनों भाई बलिष्ठ हैं, अतः क्यों न आपस में लड़कर हार-जीत का निर्णय कर लें, व्यर्थ सेना क्यों मारी जावे, मंत्रियों का प्रस्ताव मान दोनों में मल्ल, जल और दृष्टि युद्ध हुए, जिनमें बाहुबली विजयी हुए, पर उन्होंने जीतकर भी सन्यास ले लिया। अहिंसा के बल पर स्वराज्य प्राप्ति से इस घटना का औचित्य सिद्ध हो जाता है।

भारतवर्ष में आज जो गणतन्त्र परम्परा है वह महावीर के काल में भी थी। महावीर के नाना वैशाली के राजा चेटक लिच्छवि, वज्जि, ज्ञातृक, विदेह, मल्ल आदि गणों के प्रधान थे। सन्यास लेने के बाद महावीर ने चन्दनबाला के हाथ से आहार ग्रहण कर नारियों के सम्मान

में अभिवृद्धि की थी।

महावीर के बाद शक्तिशाली सम्राटों में चन्द्रगुप्त हुआ। कहा जाता है कि चन्द्रगुप्त मौर्य आचार्य भद्रबाहु श्रुतकेवली का भक्त था और उसने अपने अन्तिम समय में जैन दीक्षा लेकर श्रवणबेलगोल में अपना अन्तिम समय व्यतीत किया था। सम्राट अशोक कलिंग युद्ध के बाद युद्धों से जो विरत हुआ उसका मूल कारण, उसके संस्कार अहिंसामूलक होना ही है। उसने अपने सारनाथ के सिंह स्तम्भ (जो सम्प्रति हमारा राष्ट्रीय चिह्न है) में जो सिंह और २४ आरे रखे हैं उसका मूल आधार उसके संस्कारों में महावीर की भक्ति उनके चिह्न शेर का ज्ञान और २४ तीर्थंकरों पर श्रद्धान होना ही है।

सम्राट ऐल खारवेल ने अपने खण्डगिरि-उदयगिरि के शिलालेख में सर्वप्रथम अरिहन्तों और सिद्धों को नमस्कार किया है। दक्षिण के गंग, कदम्ब, पल्लव, चालुक्य आदि वंशों के राज्यकाल में अहिंसाधर्म की प्रधानता रही। राजस्थान में राजाओं के अधिकाँश मंत्री, दीवान, भण्डारी, सामन्त, सरदार आदि जैन रहे थे। मेवाड़ के इतिहास में आशाशाह और उसकी वीर माता का नाम अमर है। महाराणा रत्नसिंह की मृत्यु के बाद उसका छोटा भाई विक्रमाजीत गद्दी पर बैठा किन्तु वह अयोग्य था और उसका छोटा भाई उदयसिंह नन्हा बालक। अतः सरदारों ने विक्रमाजीत को गद्दी से उतारकर दासीपुत्र बनवीर को राणा बना दिया। बनवीर ने विक्रमाजीत की हत्या कर जब उदयसिंह की हत्या करनी चाही तो पन्ना धाय अपने पुत्र का बलिदान देकर उदयसिंह को बाहर ले आई। पन्ना धाय आश्रय की खोज मे अनेक सामन्त-सरदारों के पास भटकी पर अत्याचारी बनवीर के भय से आश्रय देने के लिए कोई तैयार नहीं हुआ। अन्ततः वह कुम्भलमेर पहुँची, जहाँ का दुर्गपाल आशाशाह (जैन) था। आशाशाह भी जब अपनी असमर्थता जाहिर करने लगा तो उसकी वीर माता कुपित होकर सिंहनी की भाँति आशाशाह पर झपटी और कहा–"तू कैसा पुत्र है जो विपत्ति के समय भी किसी के काम नहीं आता, एक माता पुत्र का बलिदान देकर उदयसिंह को बचा लाई और तूँ उसकी रक्षा भी नहीं कर सकता। तुझे जीने का कोई अधिकार नहीं।" आशाशाह गद्गद् होकर वीर जननी के चरणों में गिर पड़ा। आशाशाह ने कुमार को अपना भतीजा या भानजा कहकर प्रसिद्ध किया। कुछ काल के बाद उदयसिंह ने अन्य सामन्तों की सहायता से चित्तौड़ का सिंहासन प्राप्त कर लिया।

देशोद्धारक भामाशाह के अवदान को कैसे विस्मृत किया जा सकता है। हल्दीघाटी के युद्ध में पराजित होने के बाद जब राणाप्रताप ने स्वदेश परित्याग का संकल्प लिया तब स्वदेश भक्त और स्वामीभक्त भामाशाह राणाप्रताप का रास्ता रोककर खड़ा हो गया और देशोद्धार के लिए उन्हें उत्साहित करने लगा। राणा ने कहा–"न मेरे पास धन है, न सैनिक और न साथी। किस बलबूते पर मैं देशोद्धार का प्रयत्न करूँ।" भामाशाह ने तत्काल विपुलद्रव्य उनके चरणों में समर्पित कर दिया। वह द्रव्य इतना था जिससे २५००० सैनिकों का १२ वर्ष तक निर्वाह हो सकता था।

१८५७ की क्रान्ति अपने आप में अद्भुत थी। महारानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे, बेगम हजरत

महल, बहदुरशाह जफर, मंगल पाण्डे, लाला हुकुमचंद जैन आदि शहीदों ने अपनी कुर्बानियां देकर आजादी की मशाल जलाई। अमर शहीद अमरचंद बाँठिया ग्वालियर के सिन्धिया नरेशों के खजांची थे। लक्ष्मीबाई के पास जब लड़ते-लड़ते धन की कमी हो गई, तब अमरचंद बाँठिया ने खजाना खोलकर प्रभूत धन उन्हें दिया, बाद में २२ जून १८५८ को ग्वालियर के सर्राफा बाजार में नीम के पेड़ पर लटकाकर उन्हें फाँसी दे दी गई और गम्भीर चेतावनी के रूप में उनका शव तीन दिन तक पेड़ पर लटकाये रखा गया। इसी तरह बहादुरशाह जफर के मित्रवत् रहे फाँसी के लाला हुकुमचंद जैन द्वारा अंग्रेजों के विरुद्ध बहादुरशाह जफर को लिखे गये एक पत्र के आधार पर उन्हें फाँसी में उन्हीं की कोठी के सामने १६ जनवरी १८५८ को फाँसी पर लटका दिया गया और शव को धार्मिक मान्यताओं के विपरीत दफनाया गया। पास ही खड़े हुकुमचंद के १४ वर्षीय भतीजे फकीरचंद को भी बिना किसी आरोप के फाँसी पर लटका दिया गया।

१९१३ के लगभग आरा के महन्त से क्रान्ति के लिए धन लूटने के अभियोग में मोतीचंद शाह को फाँसी की सजा दी गई। १९४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन में गढाकोटा के साबूलाल जैन, मण्डला के उदयचंद जैन, अहमदाबाद के नत्थालाल शाह और कु० जयावती संघवी, दमोह के प्रेमचन्द जैन आदि ने अपना बलिदान देकर आजादी का मार्ग प्रशस्त किया था।

महात्मा गांधी ने जिस अहिंसा के बल पर देश को आजादी दिलाई उसकी प्रेरणा उन्हें अपने वैष्णव और जैन संस्कारों से मिली थी। गांधी जी जब अध्ययनार्थ विदेश जाने लगे और उनकी माता ने उन्हें इस भय से भेजने में आना-कानी की, कि विदेश में जाकर यह माँस-मदिरा भक्षण करेगा तब जैन मुनि बेचरजी स्वामी ने उन्हें माँसादि सेवन न करने की प्रतिज्ञा दिलाई थी। स्वयं गांधी जी ने लिखा है–"बेचरजी स्वामी मोढ बनियों में से बने हुए एक जैन साधु थे. .....उन्होंने मदद की। वे बोले–"मैं इस लड़के से इन तीनों चीजों के व्रत लिवाऊगाँ। फिर इसे जाने देने में कोई हानि नहीं होगी।" उन्होंने प्रतिज्ञा लिवाई और मैंने माँस, मदिरा तथा स्त्री–संग से दूर रहने की प्रतिज्ञा की। माता जी ने आज्ञा दी।"

–(सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा, ले०–मो०क०गांधी, पृष्ठ–३२)

गांधी जी के जीवन में प्रसिद्ध आध्यात्मिक संत श्रीमद् राजचन्द्र का गहरा प्रभाव था। जब दक्षिण अफ्रीका में गांधी जी को हिन्दू धर्म पर अनेक शंकाएँ हुईं और उनकी आस्था डिगने लगी तब अपनी लगभग ३३ शंकाएँ गांधी जी ने राजचन्द्र जी को भेजीं। राजचन्द्र जी ने उनके जो उत्तर दिये उनसे गांधी जी की सत्य और अहिंसा में दृढ आस्था हो गई। स्वयं गांधी जी ने लिखा है– "मेरे जीवन पर गहरा प्रभाव डालने वाले आधुनिक पुरुष तीन हैं; रायचन्द भाई ने अपने सजीव सम्पर्क से, टॉलस्टाय ने 'बैकुण्ठ तेरे हृदय में' नामक अपनी पुस्तक से और रस्किन ने 'अन्टु दिस लास्ट'–सर्वोदय नामक पुस्तक से मुझे चकित कर दिया।" (आत्मकथा, पृ०७६)

क्रान्तिकारी अर्जुनलाल सेठी के अवदान को कैसे विस्मृत किया जा सकता है, जिन्हें जेल से छूटकर आने पर तिलक ने अपनी माला उतारकर पहना दी थी और इन्दौर में छात्रों ने उनकी बग्घी के घोड़े खोलकर स्वयं बग्घी अपने हाथों से खींची थी।

भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन में जैनियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया था। जहाँ अनेकों वीर-पुरुषों ने अपना बलिदान देकर आजादी के मार्ग को प्रशस्त किया, वहीं अनेकों ने जेल की दारुण यातनाएँ सहीं। अनेकों माताओं की गोदें उजड़ गईं तो अनेकों के सिन्दूर पुँछ गये। ऐसे लोगों के अवदान को भी कम करके नहीं आँका जाना चाहिए जिन्होंने बाहर से इस आन्दोलन को समर्थन दिया, जेल गये व्यक्तियों के परिवारों के भरण-पोषण की व्यवस्था की। जैन समाज धनिक समाज रहा है, अतः उसने जितना आर्थिक सहयोग इस आन्दोलन में दिया शायद ही किसी ने दिया हो।

आजादी के इस आन्दोलन में महिलाओं ने पुरुषों के कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य किया। कुछ तो सीधे ही क्रान्तिकारी आन्दोलनों से सम्बद्ध रहीं, कुछ ने जेलों की दारुण यातनाएँ सहीं। अनेकों धरने, विदेशी वस्त्र बहिष्कार, जैसे आन्दोलनों में सक्रिय रहीं, पर इनसे भी अधिक ऐसी महिलाओं की संख्या है, जिन्होंने आरती उतारकर अपने पतियों को सहर्ष जेल भेजा और घर की दुश्चिन्ताओं से मुक्त रखा। जैन महिलाएँ भी इस कार्य में पीछे नहीं रहीं।

डॉ० श्रीमती ज्योति जैन, जो मेरी धर्मपत्नी भी हैं, ने बड़े परिश्रम से भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लेने वाली विशेषतः जेल यात्रा करने वाली जैन महिलाओं का परिचय इस पुस्तक में दिया है। श्रीमती जैन मेरे वृहद् ग्रन्थ 'स्वराज्य और जैन' के लेखन में भी सहयोग कर रहीं हैं। एक पति के नाते नहीं अपितु एक प्राक्कथन लेखक के नाते मैं श्रीमती जैन के इस श्रमसाध्य कार्य की सराहना करता हूँ और आशा करता हूँ कि वे इसी प्रकार भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने वाले अज्ञात सेनानियों को ज्ञात बनाने में अपनी ऊर्जा का सदुपयोग करेंगी। यह और भी प्रसन्नता की बात है कि पुस्तक का प्रकाशन स्वतन्त्रता की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर हो रहा है, अतः यह पुस्तक स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने वाली महिलाओं के प्रति देश की विनयाञ्जलि है।

राष्ट्रीयता

"प्रत्येक देश को स्वाधीन रहने का जन्मसिद्ध अधिकार है। उस अधिकार को जो छीनना चाहे, उसका सम्पूर्ण शक्ति लगाकर सामना करना ही राष्ट्रीयता है।"

–पं० चैनसुखदास न्यायतीर्थ

"श्री अर्जुनलाल सेठी के वफादार और जांबाज शिष्य वीर मोतीचन्द जैन को फाँसी की सजा हो गई। मोतीचन्द महाराष्ट्रियन जैन थे। सेठी जी को बहुत सदमा पहुँचा। मोतीचन्द की पवित्र स्मृति में सेठी जी ने अपनी कन्या का विवाह महाराष्ट्र के एक युवक से इस पवित्र भावना से कर दिया कि "मैंने जिस प्रान्त और जिस समाज का सपूत देश को बलि चढ़ाया है, उस प्रान्त को अपनी कन्या अर्पण कर दूँ। सम्भव है उससे भी कोई मोती जैसा पुत्र रत्न उत्पन्न होकर देश पर न्यौछावर हो सके।"

अनुक्रमणिका

		पृष्ठ
१.	श्रीमती अंगूरी देवी	१
२.	श्रीमती कमला देवी	३
३.	श्रीमती कमला देवी जैन	४
४.	श्रीमती कमला जैन	४
५.	कमला सोहनराज जैन	५
६.	कांचनजैन मुन्नालाल शाह	५
७.	श्रीमती सरदार कुँवर बाई लूणिया	५
८.	स्व० श्रीमती केशरबाई	६
९.	स्व० श्रीमती गंगाबाई जैन	६
१०.	श्रीमती गोविन्द देवी पटुआ	६
११.	स्व० ब्रह्मचारिणी पण्डिता चन्दाबाई	७
१२.	अमर शहीद कुमारी जयावती संघवी	९
१३.	श्रीमती ताराबाई जैन कासलीवाल	९
१४.	श्रीमती धनवतीबाई रांका	९
१५.	श्रीमती नन्हींबाई जैन	१०
१६.	श्रीमती प्रभादेवी शाह	१०
१७.	श्रीमती प्रेमकुमारी विशारद	११
१८.	श्रीमती पुष्पा देवी कोटेचा	१२
१९.	श्रीमती फूलकुँवरबाई चौरड़िया	१२
२०.	बयाबाई रामचन्द्र जैन	१३
२१.	मृदुला बेन साराभाई	१३
२२.	श्रीमती माणिक गौरी	१४
२३.	मीराबाई रमणलाल शाह	१५
२४.	रतनबाई स्वरूपचन्द्र शहा	१५
२५.	श्रीमती राजमती पाटिल	१५
२६.	स्व० श्रीमती लक्ष्मीदेवी जैन	१७

		पृष्ठ
२७.	लिलावतीबाई कस्तुरचन्द्र शहा	१८
२८.	श्रीमती लीला बहिन एवं रमा बहिन	१९
२९.	स्व० श्रीमती लेखवती जैन	२१
३०.	स्व० श्रीमती विद्यावती देवड़िया	२२
३१.	विमलाबाई गुलाबचन्द्र शहा	२५
३२.	श्रीमती सज्जन देवी महनोत	२५
३३.	श्रीमती सरलादेवी साराभाई	२६
३४.	श्रीमती सरस्वती देवी रांका	२७
३५.	सरस्वतीबाई छगनलाल शहा	२८
३६.	समाधिस्थ आर्यिका सर्वतीबाई या सरस्वती देवी	२८
३७.	पण्डिता सुमतिबेन नेमचन्द्र शाह	२८
३८.	स्व० श्रीमती सुन्दर देवी जैन	२९
३९.	स्त्रियाँ राजनैतिक क्रान्ति में भाग लें या नहीं ?	३१
४०.	नहीं बनेगा पाकिस्तान	३४
४१.	खड़ी द्वार पर जय आजादी	३८
४२.	भारत बने स्वतन्त्र हमारा	३९
४३.	यह कोमल कलिका है, इसको अभी तोड़ मत माली	४२
४४.	आज फिर संसार में सर्वत्र ही सुख–शान्ति छाये	४३
४५.	नारी बिन अब उठ न सकेगी, उन्नति की पतवार	४४
४६.	सन्दर्भ ग्रन्थ सूची	४६

स्वराज्य और जैन महिलाएँ

श्रीमती अंगूरी देवी

आगरा में 'देवी जी' उपनाम से प्रसिद्ध श्रीमती अंगूरी देवी का जन्म १९ जनवरी १९१० को श्री होतीलाल जैन के घर कासगंज (उ० प्र०) में हुआ। आपने कक्षा ५ तक ही शिक्षा पाई थी कि २२ मई १९२२ में आगरा के महान् देशभक्त महेन्द्र जी के साथ आपका विवाह हो गया। आपके पति प्रसिद्ध स्वाधीनता सेनानी, साहित्यकार, पत्रकार, संस्कृतिकर्मी, जैन साहित्योद्धारक, प्रकाशक और श्री बनारसीदास चतुर्वेदी के शब्दों में–'अखिल भारत के चोटी के हिन्दी लेखक' थे।

उन दिनों महिलाएँ घर की चारदीवारी तक ही सीमित रहतीं थीं, शिक्षा की कमी थी और पर्दाप्रथा अपनी चरम सीमा पर थी परन्तु श्रीमती अंगूरी देवी के पति ने स्वयं उन्हें पढ़ाया और पर्दा छुड़ाकर स्वतन्त्रता आन्दोलन में अपनी सहयोगिनी बना लिया।

जब देशभर में २६ जनवरी, १९३० को पूर्ण स्वाधीनता दिवस मनाने के निर्देश का परिपत्र काँग्रेस कमेटियों को भेजा गया तथा 'स्वाधीनता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' की घोषणा की गयी, तब पूरे देश में जगह-जगह सार्वजनिक सभाएँ हुईं, 'वन्दे मातरम्' राष्ट्र-गान के साथ तिरंगे झंडे को सलामी दी गयी। इस अवसर पर अंगूरी देवी ने सैनिक प्रेस की छत पर खड़े होकर भाषण दिया। इस सभा में सैकड़ों भाई-बहिन इकट्ठे हुए, पुलिस ने बड़ी निर्दयता से इस सभा पर लाठीचार्ज किया जिससे सभा भंग हो गयी। पुलिस ने आपको गिरफ्तार कर लिया। सारे रास्ते आप नारे लगातीं रहीं–'इन्कलाब जिन्दाबाद'। दरोगा डंडे फटकारता रहा और कहता रहा 'चुप रहिए' लेकिन आपकी आवाज कम नहीं हुई। यहाँ से आपको जिला जेल भेजा गया उस समय आप गर्भवती थीं फिर भी ६ माह की सजा सुनायी गयी।

नमक सत्याग्रह आन्दोलन में पूरा देश गांधीजी के साथ था। गांधीजी की ऐतिहासिक दांडी यात्रा देश भर में चर्चा का विषय थी। उन्होंने सार्वजनिक रूप से 'नमक कानून' को भंग किया था। इस यात्रा में उनके साथ सरोजिनी नायडू भी थीं जिन्होंने जगह-जगह महिलाओं को सत्याग्रह की प्रेरणा दी थी। गांधीजी गिरफ्तार हुए और देशव्यापी आम हड़ताल हुई सभी जगह जुलूस निकाले गये। अंगूरी देवी ने नमक सत्याग्रह आन्दोलन में कोतवाली पर धरना दिया। पुलिस के प्रहार के कारण आपको काफी चोटें आयीं। आपको गिरफ्तार

किया गया और ६ माह की सजा एवं जुर्माना हुआ। जेल से रिहा होने पर आप पुनः देशहित के कार्यों में जुट गयीं। आपने न केवल महिलाओं को आन्दोलन में भाग लेने के लिए एकत्रित किया अपितु उनका नेतृत्व भी स्वयं किया।

१९३२ के सत्याग्रह के बाद आप अन्दर ही अन्दर हिंसात्मक गतिविधियों में सक्रिय हो गयीं थीं। आपके निर्देशन में थाना छत्ता में बम फेंका गया। टेलीफोन एवं तार व्यवस्था भंग कर दी गयी। टूँडला स्टेशन पर रेल की बोगियाँ जला दीं गयीं। पोस्ट ऑफिस फूँके गये। इस तरह अनेक हिंसात्मक गतिविधियों का सफल निर्देशन आपने किया।

१९४१-४२ का आन्दोलन अंग्रेजों को सहयोग न देने के रूप मे आरम्भ हुआ। ८ अगस्त को काँग्रेस के ऐतिहासिक बम्बई अधिवेशन में 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पास हुआ। गांधी जी ने प्रेरणादायक भाषण दिया। अगली सुबह जेल जाते समय वे एक छोटा सा मंत्र करेंगे या मरेंगे' दे गये। पूरे देश में 'करो या मरो' के साथ खुली बगावत शुरू हो गयी। सारे देश में जुलूस आदि निकाले गये। अंगूरी देवी ने भी आगरा में जुलूस का सफल नेतृत्व किया। महिलाएँ खुलकर इस आन्दोलन में भाग ले रहीं थीं।

स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व देश का बँटवारा स्वीकार किया गया। आबादी की भारी अदला-बदली हुई, दंगे भड़क उठे। मनुष्य, मनुष्य का शत्रु बन गया। स्त्रियों की तो जैसे जान पर ही बन आयी। उन दिनों अंगूरी देवी के पति जेल में थे, उनका निर्देश था कि-'वे सभी कार्यकर्ताओं के परिवारों की सहायता एवं देखभाल करें।' अंगूरी देवी बड़ी लगन और कर्मठता से घर-घर जाकर अपनी जिम्मेदारी पूरी करने में लगीं रहीं। आज भी आपसे मिलने पर वही राष्ट्रप्रेम, वही समाज सेवा की भावना आपमें देखने को मिलती है। धर्मपरायण अंगूरी देवी भविष्य के प्रति आशावान हैं।

मेरे पति डॉ० कपूर चन्द जैन ने पर्युषण पर्व वीर नि० सं० २५१९ (सितम्बर १९९३ ई०) में अपने आगरा प्रवास के दौरान श्रीमती जैन से उनके निवास पर एक साक्षात्कार लिया। परिचयादि के बाद डॉ० जैन ने प्रश्न किया कि–'आज की पीढ़ी को आप क्या सन्देश देना चाहेंगी ?' उनके यह कहने पर आपने कहा कि–"मैं बहुत थोड़ी सी शिक्षा ही ग्रहण कर पायी पर उस समय इतना मतलब अवश्य समझती थी कि 'देश को आजाद कराना है', मैं अनपढ़ तथा पढ़े-लिखे सभी से ये कहना चाहूँगी कि वे ''इस देश के मूल्य को पहचानें, इस धरोहर को सहेजकर रखें एवं इसके विकास के लिए उठ खड़े हों। यह देश हमारा है, इस देश को अपना समझें, पहचाने, विदेशी फैशन को न अपनायें। हमारी सभ्यता एवं संस्कृति को सहेज कर रखें।''

८३ वर्षीया 'देवी जी' की वेदना थी कि राजनैतिक पार्टियाँ धर्म को सड़क पर ला रहीं हैं। धर्म बौद्धिक ज्ञान व मनःशुद्धि का साधन है न कि कुर्सी हथियाने का। पार्टियाँ धर्म के नाम पर जातिवाद व देश का विखण्डन न करें। आज हम एकता की बजाय अनेकता की ओर अग्रसर हो रहे हैं। देश विभाजित हो रहा है, जाति-भेद में हम बँटे जा रहे हैं। अनेकता एवं विभाजन के इस प्रवाह को रोकने की जरूरत है। समाज सेवी संस्थाओं, युवा देशभक्तों को आगे आने की आज अत्यधिक आवश्यकता है।

अपनी जेल यात्रा का कोई संस्मरण सुनाने का आग्रह करने पर आपने कहा था कि– 'जब हम सभी महिलाएँ काम निपटाकर रात में एक साथ बैठतीं, तो कोई न कोई कविता आदि सुनातीं थीं, मैंने भी एक कविता बनाई थी। श्रीमती जैन ने स्वयं यह कविता सुनाई–

जेल मत समझो री बहिनो
जेल जाने के लिए
कृष्ण मन्दिर है वहाँ
प्रसाद पाने के लिए
दो समय प्रसाद भी मिलता नहीं
बराबर नियम से
एक चमचा दाल,
रोटी पाँच खाने के लिए।
हापुड़ के पापड़ से बढ़कर रोटियाँ हैं जेल की
दाल क्या ? जीरा जल
कब्जी मिटाने के लिए
यहाँ कोई बेकार बैठ सकता है नहीं
चक्र भी है कृष्ण का चक्की चलाने के लिए
शरम है गर, चोरी–चारी कर
जायें जेल में
देशहित तैयार हैं
गरदन कटाने के लिए

(आधार–१. साक्षात्कार, सितम्बर १९९३, २. जैन सन्देश, राष्ट्रीय अंक, ३. उत्तर प्रदेश और जैन धर्म पृ०-८९, ४.गोर्धनदास अभिनन्दनग्रन्थ, पृ०-२१८)

श्रीमती कमला देवी

श्रीमती कमला देवी ने राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेकर जैन नारियों का गौरव व

उनकी गरिमा को बढ़ाया है। आपका जन्म ललितपुर (उ० प्र०) में १९१५ में हुआ। अपने पति प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी एवं पत्रकार पं० परमेष्ठीदास जी का सहयोग प्राप्त कर, नारीवर्ग को अभिनव दिशा देते हुए सन् १९४२ के जन आन्दोलन में आपने सक्रिय भाग लिया एवं सामाजिक परम्पराओं के दायरे में नारी वर्ग को एक दिशा प्रदान की। आपकी प्रेरणा से महिलाओं में कुछ कर गुजरने का उत्साह पैदा हो रहा था। धारा १४४ को भंग करके श्रीमती कमला देवी ने जुलूस का नेतृत्व किया। सभाबंदी कानून भंग करके सभा में भाषण देने के कारण आपको साबरमती जेल में पाँच माह रहना पड़ा। आप प्रगतिशील विचारों की धार्मिक शिक्षित महिला हैं। आपने धर्म, न्याय और साहित्य का अध्ययन किया है और काव्य के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त की है। साहित्यिक प्रतिभा के कारण ही आपको 'राष्ट्रभाषा कोविद' की उपाधि से अलंकृत किया गया था। आपका व्यक्तित्व सौम्यता, सरलता और सेवापरायणता का मणिकांचन संयोग है। आपका पता है—जैनेन्द्र प्रेस, ललितपुर (उ० प्र०)

(आधार—१. रजत नीराजना, पृ० ३२, २. विद्वत् अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ० २२७, ३. गोलालारे जैन जाति का इतिहास, पृ० ७८३)

श्रीमती कमला देवी जैन

मेरठ निवासिनी और दिल्ली प्रवासिनी श्रीमती कमला देवी जैन धर्मपत्नी श्रीमहावीर प्रसाद जैन का जन्म १९१५ में हुआ। यौवन की तरुणाई अभी प्रस्फुटित ही हो रही थी कि वे स्वतन्त्रता आन्दोलन में कूद पड़ीं। उन्होंने सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लिया। १ मार्च, १९३२ को दो महीने कारावास की सजा उन्हें दी गयी।

(आधार—दिल्ली के स्वतन्त्रता सेनानी, भाग-२, पृ० ८९)

श्रीमती कमला जैन

ग्राम-मलावली, जिला-अलवर (राजस्थान) के श्री किशोरीलाल की पुत्री श्रीमती कमला जैन के पति का देहान्त अल्प आयु में ही हो गया। वैधव्य दुःख के साथ ही आपने देशसेवा के कार्य को अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया। सन् १९४० में अलवर राज्य प्रजामंडल के आन्दोलन "गैर जिम्मेदार मिनिस्टरो कुर्सी छोड़ो" में श्रीमती जैन को अन्य महिलाओं के साथ पकड़कर जंगलों में छोड दिया गया। स्वतन्त्र भारत में आप राजकीय सेवा में रहीं और अन्त में विकास अधिकारी के पद से सेवामुक्त हुईं। राजस्थान सरकार ने आन्दोलन में योगदान के लिए आपको स्वतन्त्रता सेनानी घोषित किया है।

(आधार—पल्लीवाल जैन इतिहास, पृ० १३८)

कमला सोहनराज जैन

श्रीमती कमला सोहनराज जैन का जन्म कानपुर (उ० प्र०) में हुआ। बाद में वे बम्बई (महाराष्ट्र) प्रवासिनी हो गईं। मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त श्रीमती जैन १९४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन के समय कर्मठ काँग्रेस सेविका थीं। देश की आजादी हेतु अपना सर्वस्व समर्पण करने को आतुर श्रीमती जैन १९४४ के आसपास तक इस आन्दोलन में सक्रिय रहीं। इसी समय वे गिरफ्तार कर ली गईं तथा एक अठवड़ा की कैद व १५ रुपये का जुर्माना उन पर किया गया। पर आजादी की दीवानगियों ने कभी अर्थदण्ड भरा है ? उत्तर नकारात्मक ही होगा। कमला जी ने भी यही किया फलतः उन्हें अर्थदण्ड अदा न करने के बदले और भी कुछ समय जेल में रहना पड़ा।

(आधार—स्वातन्त्र्य सैनिक चरित्र कोश, (बम्बई विभाग), पृ० ३२)

कांचनजैन मुन्नालाल शाह

पूज्य बापू के आश्रम में अनेक वर्षों तक रहने वाली कांचन जैन मुन्नालाल शाह का जन्म १९१६ में चिखोदरा (गुजरात) में हुआ, बाद में वे वर्धा (महाराष्ट्र) प्रवासिनी हो गईं। देश की आजादी को ही अपना सर्वोच्च लक्ष्य निर्धारित करने वाली कांचन जैन ने १९४२ के 'भारत छोड़ो आन्दोलन' में सक्रियता से भाग लिया और एक वर्ष १२ दिन का कारावास भोगा।

(आधार—स्वातन्त्र्य सैनिक चरित्र कोश, (विदर्भ विभाग), खण्ड-२, पृ० ५७३)

श्रीमती सरदार कुँवर बाई लूणिया

अजमेर (राजस्थान) के प्रसिद्ध देशप्रेमी श्री जीतमल लूणिया की धर्मपत्नी श्रीमती सरदार कुँवर बाई लूणिया पर्दाप्रथा का बहिष्कार कर राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने वाली ओसवाल जैन समाज की प्रथम महिला रत्न थीं। उस समय हो रही समस्त राजनैतिक गतिविधियों में बढ़-चढ़कर आपने हिस्सा लिया था। १६३३ के आन्दोलन में आपने भाग लिया और लूणिया जी के जेल जाने के बाद भी अपनी राजनैतिक गतिविधियाँ जारी रखीं। विदेशी कपड़ों की दुकान पर पिकेटिंग करने के फलस्वरूप आपको गिरफ्तार कर लिया गया और छह महीने की सजा दी गयी। आपके साथ और भी अनेक महिलाएँ गिरफ्तार हुई थीं। मजिस्ट्रेट ने कुँवर बाई को 'ए' क्लास और अन्य को 'सी' क्लास में रखने का फैसला दिया परन्तु कुँवर बाई ने इसका विरोध किया और अपने तीन वर्षीय पुत्र के साथ अन्य महिलाओं सहित 'सी' क्लास में ही रहीं।

(आधार—१. जैन सन्देश, राष्ट्रीय अंक, २. इतिहास की अमरबेलः ओसवाल, भाग-२, पृ०-३७३)

स्व० श्रीमती केशरबाई

भारत माता के चरणों में सर्वस्व न्यौछावर करने वाली श्रीमती केशरबाई का जन्म १९१५ में हुआ था। आपके पति श्री मोतीलाल जैन ललितपुर (उ० प्र०) के निवासी थे। श्रीमती केशरबाई महात्मा गांधी की प्रेरणा से आजादी के रणक्षेत्र में कूद पड़ीं। उस समय जबकि समाज में नारियों का स्थान केवल घर-दहलीज तक ही सीमित था, श्रीमती केशरबाई सामाजिक बन्धनों को तोड़कर नारी जाति को जाग्रत करने में जुट गयीं और काँग्रेस की सक्रिय कार्यकर्ता हो गयीं। १६४१ का व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन प्रत्येक कार्यकर्ता को स्वतन्त्रता के लिए प्रेरित कर रहा था। श्रीमती केशरबाई ने तन-मन-धन से इस आन्दोलन में हिस्सा लिया, फलतः १ माह कारावास की सजा उन्हें भोगनी पड़ी। आपके पति भी सक्रिय काँग्रेस कार्यकर्ता थे। अन्याय के प्रति संघर्ष ही इस दम्पति का लक्ष्य था।

(आधार—१. रजत नीराजना, पृ० ३६-४०, २. जैन सन्देश, राष्ट्रीय अंक)

स्व० श्रीमती गंगाबाई जैन

स्व० श्रीमती गंगाबाई जैन प्रसिद्ध देशभक्त वैद्य कन्हैयालाल जैन (कानपुर) की धर्मपत्नी थीं। श्रीमती जैन, उनके पति एवं दो पुत्र स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान जेल गये। शिक्षा प्रसार के लिए समर्पित श्रीमती जैन अपने पति के कंधे से कंधा मिलाकर आन्दोलन में सक्रिय रहीं। जैन सन्देश, राष्ट्रीय अंक (जनवरी १९४७) लिखता है—'आपको स्वदेशी से बड़ा प्रेम था। आपके कारण जैन समाज एवं नगर की स्त्रियों में स्वदेशी का बहुत प्रचार हुआ।' साइमन वापिस जाओ, दांडी यात्रा, नमक सत्याग्रह आदि आन्दोलनों तथा सत्य—अहिंसा और भाईचारे की नीति ने गांधीजी को जनता के बीच में ला दिया था। जगह—जगह जलसे कर जन—जागृति की जा रही थी, इसी क्रम में १६३१ के आन्दोलन के समय जब कानपुर में यू० पी० काँग्रेस का जलसा श्रद्धेय पुरुषोत्तमदास जी टण्डन के सभापतित्व में हुआ तो उसकी स्वागताध्यक्षा बनने के कारण श्रीमती गंगाबाई को ६ माह का कारावास झेलना पड़ा। आप जीवन पर्यन्त देश एवं समाज के प्रति समर्पित रहीं।

(आधार—१. पं० बच्चूलाल जैन, कानपुर द्वारा प्रेषित परिचय, २. जैन सन्देश, राष्ट्रीय अंक)

श्रीमती गोविन्द देवी पटुआ

स्वतन्त्रता आन्दोलन में सहर्ष कष्ट झेलने वाली जैन वीर महिलाओं में कलकत्ता की श्रीमती गोविन्द देवी पटुआ का नाम बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है। अंग्रेजों को प्रारम्भ से ही बंगाल में विरोध का सामना करना पड़ा था। गांधीजी के आह्वान पर महिलाओं ने

आन्दोलनों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। गांधीजी ने जब असहयोग का शंख फूँका तो श्रीमती पटुआ ने बड़ा बाजार कलकत्ता के 'विदेशी वस्त्रों' की दुकानों पर धरना देने वाले जत्थों का नेतृत्व वीरतापूर्वक किया था। 'साइमन कमीशन' जब भारत आया तो सभी राजनैतिक दलों ने कमीशन का बहिष्कार किया। देशव्यापी हड़ताल हुई और जगह-जगह 'साइमन लौट जाओ' के नारे लगाये गये। श्रीमती पटुआ इस बहिष्कार में अग्रणी रहीं थीं। १६४२ के 'भारत छोड़ो आन्दोलन' में श्रीमती पटुआ ने 'करो या मरो' मंत्र के साथ बड़े उत्साह से भाग लिया, फलतः आपको गिरफ्तार कर लिया गया। जेल में अनेक यातनाएँ आपको सहनी पड़ीं फिर भी स्वतन्त्र भारत का तो जैसे आपने संकल्प ही ले लिया था। देश एवं समाज ऐसी वीरांगना पर गर्व करता है।

(आधार—इतिहास की अमरबेल : ओसवाल, भाग-२, पृ०-३७३)

स्व० ब्रह्मचारिणी पण्डिता चन्दाबाई

जैन समाज की सेवा में समर्पित, नारी जागरण की दिशा में उल्लेखनीय कार्यकर्त्री तथा जैन बाला आश्रम आरा की संस्थापिका ब्रह्मचारिणी पण्डिता चन्दाबाई का जन्म उत्तरप्रदेश के वृन्दावन नगर में सन् १८८६ में बाबू नारायणदास अग्रवाल के यहाँ हुआ था। आपके पिता काँग्रेस के प्रख्यात कार्यकर्ता और पण्डित मोतीलाल नेहरू के अन्यतम सहयोगी थे। ११ वर्ष की आयु में चन्दाबाई का विवाह आरा (बिहार) के गोयल गोत्रीय जैन धर्मावलम्बी परिवार के धर्मकुमार से हुआ, बी० ए० के अध्ययन के दौरान ही धर्मकुमार का असमय निधन हो गया। १२ वर्ष की अल्पायु में ही चंदाबाई के वैधव्य-दुःख ने धर्मकुमार के बड़े भाई के मानस को झकझोर दिया और उन्होंने चंदाबाई को पुनः विद्यारम्भ करने को प्रोत्साहित किया।

चन्दाबाई ने धर्मशास्त्र, न्याय, साहित्य और व्याकरण की शिक्षा प्राप्त करने के लिए अनवरत परिश्रम किया और काशी की 'पण्डिता' परीक्षा उत्तीर्ण कर ली। जैन शास्त्रों के अध्ययन, मनन और चिन्तन के कारण आपकी रुचि और श्रद्धा जैनधर्म में अत्यधिक हो गयी। 'रत्नकरण्ड श्रावकाचार', 'तत्त्वार्थसूत्र', 'द्रव्यसंग्रह', 'न्यायदीपिका', 'चन्द्रप्रभचरित्र' आदि अनेक प्रमुख ग्रन्थों के अध्ययन से आपने जैनधर्म की महत्ता को जान लिया और अपने जेठ श्री देवकुमार और वर्णी नेमीसागर जी के साथ प्रसिद्ध जैनतीर्थों की यात्रा की। देवकुमार जी के निधन के उपरान्त आपने अपने जीवन को पूर्णतः जैन समाज की सेवा में समर्पित कर दिया।

सन् १९२१ में जब सारे देश में महात्मा गांधी का असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ हुआ तो आपने उसमें भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया, जैन बाला आश्रम (आरा) की स्थापना की और

महिलादर्श नामक पत्र का संपादन प्रारम्भ किया। आश्रम में महिलाओं में शिक्षा, धर्म तथा संस्कृति के प्रति रुचि जाग्रत की और स्वदेशी वस्त्रों को धारण करने की प्रेरणा दी। आश्रम की समस्त शिक्षिकाएँ और छात्राएँ चर्खा कातती और कपड़े बुनती थीं। 'अखिल भारतीय जैन महिला परिषद्' की स्थापना करके देश की महिलाओं में पर्दाप्रथा और दासता की भावना को दूर करने का प्रयास भी आपने किया था।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, कस्तूरबा गांधी, डा० राजेन्द्र प्रसाद, पण्डित जवाहरलाल नेहरू, नेता जी सुभाष चन्द्र बोस, आचार्य कृपलानी आदि अनेक नेतागण राष्ट्रीय आन्दोलन के जमाने में 'जैन बाला आश्रम' में आकर ठहरते थे। 'जैन बाला आश्रम' की शिक्षा गांधी जी द्वारा प्रतिपादित राष्ट्रीय शिक्षा के आधार पर दी जाती थी। जैनधर्म और संस्कृत के अतिरिक्त हिन्दी माध्यम से ही शिक्षा अनिवार्य थी। शिक्षा के सम्बन्ध में आप महात्मा गांधी से विचार-विमर्श भी करती थीं।

ब्र० चन्दाबाई उच्चकोटि की लेखिका और चिन्तक भी थीं। अपनी लेखनी के माध्यम से अपने समाज-सुधार सम्बन्धी विचार 'जैन महिलादर्श' पत्र द्वारा व्यक्त करती थीं। इस पत्र के माध्यम से समाज को एक नयी दिशा मिली। बाल-विवाह, वृद्ध–विवाह के विरोध में जहाँ समाज को सचेत किया, वहीं स्त्रीशिक्षा की ओर भी आपने अधिक बल दिया। अनेक शैक्षणिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक कर्त्तव्यों का निर्वाह करते हुए आपने जैनधर्म के प्रख्यात आचार्य, आचार्य शान्तिसागर महाराज के साथ देश के अनेक प्रमुख नगरों की यात्रा करके धार्मिक क्षेत्र में अभिनन्दनीय कार्य किया था। आपके द्वारा लिखित पुस्तकों में 'उपदेशरत्नमाला', 'सौभाग्यरत्नमाला', 'निबन्धरत्नमाला', 'आदर्श कहानियाँ', 'आदर्श निबन्ध' और 'निबन्ध दर्पण' प्रमुख हैं। जब तक आप स्वस्थ रहीं प्रतिवर्ष शिखरजी, पावापुरी एवं राजगृही की यात्राएँ करतीं रहीं। प्रतिदिन छात्राओं को अपने पास बैठाकर शास्त्रसभा किया करतीं थीं। उनके जीवन तथा कार्यों की महत्ता का अनुमान इसी से हो जाता है कि आपके द्वारा संस्थापित 'वनिता आश्रम' को देखकर गांधीजी ने यह लिखा था–"पण्डिता चन्दाबाई द्वारा स्थापित 'वनिता आश्रम' को देखकर मुझे बड़ा आनन्द हुआ।" आपके क्रान्तिकारी कार्यों के कारण देश के सभी उच्चकोटि के नेता आपका सम्मान किया करते थे। आपकी महत्त्वपूर्ण समाज सेवाओं को दृष्टि में रखकर दिल्ली में भारत के तत्कालीन उपराष्ट्रपति डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन के कर-कमलों द्वारा एक अभिनन्दन ग्रन्थ भी आपको भेंट किया गया था। आचार्य कुन्थुसागर जी महाराज से तप-त्याग एवं संयम के सर्वोच्च पद आर्यिका की दीक्षा लेकर आप आर्यिका चन्दाबाई बन गयीं थीं। २६ जौलाई, ९६७७ को आपका देहावसान हो गया।

(आधार–१. दिवंगत हिन्दी सेवी, भाग-२, पृ० २३५-३६, २. श्री सुबोध कुमार जैन, आरा द्वारा प्रेषित परिचय, ३. जैन सन्देश, राष्ट्रीय अंक, ४. जैन जागरण के अग्रदूत, पृ०-६६-१२६)

अमर शहीद कुमारी जयावती संघवी

अहमदाबाद (गुजरात) की कुमारी जयावती संघवी भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन की वह दीपशिखा थीं जो अपना पूरा प्रकाश अभी दे भी नहीं पायीं थीं कि जीवन का अवसान हो गया। जयावती का जन्म ९६२४ में अहमदाबाद में हुआ था। ५ अप्रैल ९६४३ को अहमदाबाद नगर में ब्रिटिश शासन के विरोध में एक विशाल जुलूस निकाला जा रहा था। प्रमुख रूप से यह जुलूस कॉलेजों के छात्र-छात्राओं का ही था। इसमें प्रमुख भूमिका जयावती संघवी निभा रहीं थीं। जुलूस आगे बढ़ता जा रहा था, पर यह क्या ? अचानक पुलिस ने जुलूस को तितर-बितर करने के लिए आँसूगैस के गोले छोड़ना प्रारम्भ कर दिया। स्वाभाविक था कि गोले आगे को छोड़े गये, अतः नेतृत्व करती जयावती पर इस गैस का इतना अधिक प्रभाव पड़ा कि उनकी मृत्यु हो गयी।

(आधार–क्रान्ति कथाएँ, पृ० ८०८, शोधादर्श, फरवरी, ९६८७)

श्रीमती ताराबाई जैन कासलीवाल

स्वतन्त्रता आन्दोलन में पति के साथ कंधे से कंधा मिलाकर जेल जाने वाली महिलाओं में श्रीमती ताराबाई भी शामिल हैं। आप प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी श्री नेमीचन्द जैन कासलीवाल, महिदपुर, जिला-उज्जैन की धर्मपत्नी हैं। ९६४२ के आन्दोलन में जब श्री जैन को गिरफ्तार कर लिया गया तो श्रीमती जैन भी उनके साथ जाने के लिए अड़ गयीं। उस समय वे गर्भवती थीं। पुलिस स्टेशन पर जब थानेदार ने श्री जैन को तो जेल भेज दिया और पत्नी से वापिस जाने के लिए कहा तो ताराबाई गिरफ्तार होने के लिए थाने में ही अनशन पर बैठ गयीं। तब उन्हें भी गिरफ्तार कर जेल भेजा गया। बाद में उन्हें कोर्ट उठने तक की सजा दी गयी।

(आधार–मध्य प्रदेश सन्देश, १५ अगस्त, ९६८७, पृ० ५२)

श्रीमती धनवतीबाई रांका

खादी एवं चरखे को ही अपने जीवन का अंग बनाने वाली श्रीमती धनवतीबाई रांका नागपुर के प्रसिद्ध स्वाधीनता सेनानी और पूज्य बापू के अत्यन्त प्रिय कार्यकर्ताओं में एक श्री पूनमचन्द जी रांका (जन्म ९६०० ई०) की धर्मपत्नी थीं। पूनमचन्द जी ने लगभग छह बार विभिन्न आन्दोलनों में जेल यात्रा की थी तथा वे ९६४० के आसपास अ० भा० काँग्रेस कमेटी

के सदस्य रहे थे। पूनमचन्द जी के साथ धनवतीबाई ने भी स्वाधीनता को अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया था। राष्ट्रीय आन्दोलनों में वे महिलाओं के नेतृत्व के लिए विख्यात थीं। वे अनेकों बार जेल गयीं। उनकी देवरानी श्रीमती सरस्वती देवी रांका भी अनेकों बार जेल गयीं थीं।

(आधार–१. इतिहास की अमरबेल : ओसवाल, २/३७३, २. जैन सन्देश, राष्ट्रीय अंक)

श्रीमती नन्हींबाई जैन

सन् ९६४२ के 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' आन्दोलन में सभी प्रान्तों की महिलाओं ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया था। देश की आजादी के लिए चलाये गये इस महान् आन्दोलन में भला जबलपुर नगर कैसे पीछे रहता। ग्राम लथकाना (सिहोरा), जिला-जबलपुर (म० प्र०) की श्रीमती नन्हींबाई जैन ने सन् ९६४२ के इस आन्दोलन में भाग लिया, फलस्वरूप आपको ८ माह १८ दिन जबलपुर जेल में गुजारने पड़े।

(आधार–मध्य प्रदेश के स्वतन्त्रता संग्राम सैनिक, भाग-९, पृ० ६३)

श्रीमती प्रभादेवी शाह

अपने प्रारम्भिक जीवन को देशसेवा के लिए समर्पित करने वाली और मृत्यु के उपरान्त भी अपने पार्थिव शरीर को अनुसन्धान के लिए मेडीकल कालेज को समर्पित करने की घोषणा करने वाली श्रीमती प्रभादेवी शाह का जन्म ९६९६ में सोलापुर (महाराष्ट्र) जिले के बलसंग ग्राम में पिता श्री बालचन्द उमरचन्द शाह एवं माता श्रीमती कुल्लूबाई के यहाँ हुआ। जब श्रीमती शाह पाँच वर्ष की थीं तभी उन्हें मातृ-छाया-विहीन हो जाना पड़ा। उन्हें अब भी बचपन की वह घटना याद है जब उनकी माता का अन्तिम संस्कार खादी की साड़ी में ही हुआ था। पिता के घर स्वतन्त्रता संग्राम से जुड़े बड़े-बड़े नेताओं का आगमन होता रहता था और वे वहीं ठहरते थे। स्वयं पिता एवं उनके (श्रीमती शाह के) भाई इस आन्दोलन में सक्रिय थे, अतः देशप्रेम की भावना उन्हें विरासत में मिली। ९६३५ में प्रभादेवी का विवाह करजगी, तालुका-अक्कलकोट, जिला-सोलूपुर (महाराष्ट्र) के श्री मोतीलाल शाह के साथ हुआ, जिन्हें आन्दोलन में सक्रिय रहने के कारण १० माह की सजा एवं ५०० रु० का अर्थदण्ड भोगना पड़ा था। प्रभादेवी शाह के मुख्य कार्य प्रभात फेरी, सूत कातना, विदेशी माल का बहिष्कार आदि थे। उस समय के कुछ गीत उन्हें आज भी याद हैं। तीर्थंकर (मराठी) अक्तू०-नव० '६४ में प्रकाशित उनके परिचय के अनुसार उन्हें स्वदेशी के सन्दर्भ में वह घटना आज भी याद है जब वे ८-९ वर्ष की थीं और शालेय क्रीड़ा प्रतियोगिता में भाग लेने विंचोली ग्राम गयीं थीं। प्रतियोगिता के बाद भाग लेने वाले विद्यार्थियों को पीने के लिए

दूध दिया गया, जिसमें आयातित शक्कर (विदेशी शक्कर) मिलायी गयी थी। इस कारण उन्होंने दूध पीने से इनकार कर दिया। इसी तरह जब पहनने को विदेशी चूड़ियाँ दी गयीं तो उन्होंने लेने से इनकार कर दिया और स्वदेशी चूड़ियाँ माँगी। अन्ततः एक दुकान से स्वदेशी चूड़ियाँ मँगायीं गयीं। ९६४२ के 'भारत छोड़ो आन्दोलन' में वे सक्रिय रहीं, गिरफ्तारी का वारण्ट भी कटा पर वे गिरफ्तार न हो सकीं। सहयोगी आन्दोलनकारियों ने भी छोटे बच्चे होने के कारण उन्हें गिरफ्तार नहीं होने दिया, फिर भी वे रचनात्मक आन्दोलनों में बढ़-चढ़कर भाग लेतीं रहीं। उन्होंने अक्कलकोट संस्थान विलीनीकरण आन्दोलन में भी भाग लिया था।

आजादी के बाद वे ९६४९ में बाढ़पीड़ितों की सहायता एवं ९६६२ में भारत-चीन युद्ध में रक्तदान आदि रचनात्मक कार्यों में लगीं रहीं। वे अनेक बार पंचायत में विभिन्न पदों पर चुनीं गयीं। उन्होंने अपनी ससुराल में अक्कलकोट के राजा द्वारा मोर का शिकार करने का विरोध किया, जिसमें वे सफल रहीं। श्रीमती शाह ने मरणोपरान्त अपनी देह वैशम्पायन मेडीकल कालेज को दान देने की घोषणा की है।

(आधार–१. तीर्थंकर (मराठी), अक्टू०-नव०, ९६६४ (मराठी से हिन्दी अनुवाद के लिए हम श्री विनोद जैन छिन्दवाड़ा के आभारी हैं), २. स्वातन्त्र्य सैनिक चरित्र कोश (मराठी), पश्चिम विभाग, खण्ड-३, पृ० ५८९)

श्रीमती प्रेमकुमारी विशारद

केवल भाषणों से ही नहीं अपितु स्वयं कार्यरूप में परिणत कर पर्दाप्रथा का अन्त करनेवाली तथा वर्धा म्युनिसिपल कमेटी की कमिश्नर रहीं श्रीमती प्रेमकुमारी विशारद का जन्म ग्राम कुनाड़ी (कोटा) राजस्थान में हुआ। आपके पिता लाला मोतीलाल पहाड़िया प्रसिद्ध समाजसुधारक व्यक्ति थे। ध्यातव्य है कि राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान प्रसिद्ध समाजसुधारक दमोह (म० प्र०) के श्री दरबारीलाल जैन उर्फ स्वामी सत्यभक्त ने 'सत्य समाज' की स्थापना की थी, जिसका ध्येय समाज सुधार के साथ-साथ राजनैतिक चेतना उत्पन्न करना भी था। 'सत्य समाज' के उद्देश्यों में पर्दाप्रथा का निवारण करना भी एक था। श्री मोतीलाल जी इससे प्रभावित थे, फलतः उन्होंने पुत्री प्रेमकुमारी का विवाह 'सत्य समाज' पद्धति से अमरोहा (मुरादाबाद), उत्तर प्रदेश के श्री रघुवीर शरण दिवाकर, बी० ए०, एल० एल० बी, से किया।

श्री दिवाकर प्रसिद्ध लेखक, समाजसुधारक और स्वतन्त्र विचारक थे फिर भी ससुराल में पर्दाप्रथा न मानने के कारण प्रेमकुमारी को काफी विरोध सहन करना पड़ा, पर वे अपने निश्चय पर अडिग रहीं। बाद में आप वर्धा चली गयीं, जहाँ ९६४२ के भारत छोड़ो

आन्दोलन में आपने खुलकर भाग लिया, फलस्वरूप आप गिरफ्तार कर ली गयीं और आपको नागपुर जेल में रहना पड़ा। काँग्रेस की ओर से वर्धा म्यूनिसिपल कमिश्नर रहीं श्रीमती प्रेमकुमारी ने सत्याश्रम वर्धा से प्रकाशित होने वाले 'संगम' मासिक पत्र का सम्पादन भी किया था। जैन सन्देश (जनवरी, १९४७) लिखता है कि 'आप (प्रेमकुमारी विशारद) कट्टर समाजसुधारक, राष्ट्रीय विचारक और बहुत सादा लिबास में रहने वाली खादीप्रिय महिला हैं।'

(आधार—जैन सन्देश, राष्ट्रीय अंक)

श्रीमती पुष्पा देवी कोटेचा

स्वतन्त्रता आन्दोलन में ओसवाल जैन समाज की प्रथम महिला सत्याग्रही होने का श्रेय श्रीमती पुष्पा देवी कोटेचा को जाता है। आप श्री रतनलाल कोटेचा की धर्मपत्नी थीं। सन् १९४१ में सूरत नगर में सत्याग्रह आन्दोलन अपनी चरम सीमा पर था, उसमें महिलाएँ भी बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहीं थीं। पुष्पा देवी भला कैसे पीछे रहतीं। आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने के कारण आपको न केवल गिरफ्तार किया गया बल्कि आर्थिक जुर्माना भी लगाया गया, परन्तु 'आजादी के दीवानों ने जुर्माना या जेल में से जेल को ही गले लगाया' इस उक्ति को आपने चरितार्थ किया और जुर्माना अदा नहीं किया, बदले में जेल की और अधिक यातनाएँ सहीं।

(आधार—इतिहास की अमरबेल : ओसवाल, भाग-२, पृ०-३७३)

श्रीमती फूलकुँवरबाई चौरड़िया

श्रीमती फूलकुँवरबाई चौरड़िया का जन्म १९१४ में हुआ। अपने पति श्री माधोसिंह जी की प्रेरणा से आप देश सेवा के कार्यों में हिस्सा लेने लगीं। आपने अपने कार्यक्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया और महिलाओं में वैचारिक जागरूकता पैदा की। नीमच (म० प्र०) में अनेक प्रदर्शनों में महिलाओं के योगदान की योजना श्रीमती चौरड़िया ही बनातीं थीं और उन्हें पर्याप्त सफलता भी मिलती थी। श्रीमती चौरड़िया एक जागरूक महिला थीं। सत्याग्रह और पिकेटिंग के दौरान अनेक बार पुलिस यातनायें उन्हें सहनी पड़ीं थीं। अजमेर सत्याग्रह में भाग लेने के कारण श्रीमती चौरड़िया को ३ माह जेल में रहना पड़ा था। 'भारत छोड़ो आन्दोलन' में भी आपने सक्रिय भाग लिया था और एक माह की जेलयात्रा की थी।

(आधार—१. मध्य प्रदेश के स्वतन्त्रता संग्राम सैनिक, ४/२१६, २. मन्दसौर जिले में स्वतन्त्रता संग्राम, पृ० ६७)

बयाबाई रामचन्द्र जैन

वर्धा (महाराष्ट्र) निवासिनी बयाबाई रामचन्द्र जैन का जन्म १८८८ ई० में हुआ। १९३२ के सत्याग्रह आन्दोलन में आपने खुलकर भाग लिया। फलतः आपको गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया। चार महीने जेल के दारुण दुःख आपको झेलना पड़े। १९४२ में आपका देहावसान हो गया।

(आधार—स्वातन्त्र्य सैनिक चरित्र कोश, (मराठी), पश्चिम विभाग, पृ० १६४)

मृदुला बेन साराभाई

मृदुला बेन साराभाई राष्ट्रीय आन्दोलन की वह दैदीप्यमान दीपशिखा हैं, जिन्हें स्वराज्य की भावना विरासत में मिली। उनके पिता श्री अम्बालाल साराभाई (इनका विशेष परिचय सरलाबेन साराभाई के परिचय में देखें) पूज्य बापू के परमभक्त थे। बापू व अन्य बड़े नेता इन्हीं के घर आकर ठहरा करते थे, माता श्रीमती सरला देवी ने १९३० में गांधीजी की दांडी यात्रा के समय महिलाओं का नेतृत्व किया था तथा गांधीजी के रचनात्मक कार्यों एवं सन्देशों के प्रचार-प्रसार में वे तमाम उम्र लगीं रहीं थीं।

मृदुला बेन साराभाई का जन्म १९११ ई० में अहमदाबाद में हुआ। गांधीजी द्वारा स्थापित गुजरात विद्यापीठ में उन्होंने शिक्षा पायी। घर में देशभक्ति का वातावरण होने से बचपन से ही वे देशभक्ति और स्वाधीनता आन्दोलन से जुड़ गयीं। स्कूली शिक्षण के साथ-साथ उनका यह प्रशिक्षण भी चलता रहा। गुजरात की महिलाओं में जाग्रति लाकर उन्हें संगठित और प्रशिक्षित करके स्वतन्त्रता संग्राम में आगे बढ़ाने के लिए मृदुला बेन सदैव लगीं रहीं। उनका कार्यक्षेत्र गुजरात ही न होकर सारा देश था। १९२७-२८ के सत्याग्रह में अहमदाबाद की युवा प्रवृत्तियों के संचालन में उन्होंने अग्रणी भूमिका निभायी। १९३० में दांडी यात्रा के समय उनकी माँ इस यात्रा में महिलाओं का नेतृत्व कर रहीं थीं, मृदुला बेन भी पीछे नहीं रहीं। विदेशी कपड़ों की होली जलाने, शराब की दुकानें बन्द कराने तथा धरना-टोलियों के संगठन और संचालन में उनकी महती भूमिका रही। १९३१ में सेवा दल का संचालन उन्होंने किया। इसी समय सत्याग्रहों में भी वे अग्रणी रहीं। १९३७ के राजकोट सत्याग्रह की भी वे अगुआ थीं। १९४१-४२ में सत्याग्रहियों की देखभाल करने के लिए गांधीजी ने उन्हें नगर समिति का प्रमुख बनाया था, इसीलिए वे जेल के बाहर रहते हुए नजरबन्द रहीं, तथापि आन्दोलनों का नेतृत्व करने के कारण उन्हें दो बार जेल जाना पड़ा। वह साबरमती, बेलगाम, यर्वदा, बम्बई और थबानी की जेलों में बन्द रहीं।

कस्तूरबा गांधी के निधन के बाद गठित हुए 'कस्तूरबा गांधी ट्रस्ट' का संचालन जब श्रीमती सरला देवी साराभाई (माँ) को सौंपा गया तो मृदुलाबेन उसमें संगठन मंत्री बनीं। १९४६ में आजाद हिन्द फौज की रिहाई के लिए जन समर्थन जुटाने में महत्त्वपूर्ण कार्य भी मृदुलाबेन ने किया था। १९४१ के अहमदाबाद , १९४६ के मेरठ व १९४६-४७ के पंजाब व बिहार के साम्प्रदायिक दंगों के समय राहत कार्यों में भी उनका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण योगदान रहा था। दंगों के बाद शान्ति स्थापना, कौमी एकता के लिए स्थान-स्थान पर दौरे, शरणार्थी पुनर्वास (विशेषतः महिलाओं के लिए) में भी उनकी महती भूमिका रही थी। मृदुला बेन ने राष्ट्र के लिए अपनी जातीयता को भी अस्वीकार कर दिया था इस सन्दर्भ में जैन सन्देश (राष्ट्रीय अंक, जनवरी १९४७, पृ० ८०) लिखता है—

"जो पं० जवाहरलाल नेहरू के प्रधानमंत्रित्व में कुछ माह काँग्रेस की जनरल सेक्रेटरी, अखिल भारतीय कस्तूरबा फण्ड की ट्रस्टी तथा उसकी कार्यकारिणी की सदस्या हैं। यद्यपि जैन हैं और एक राष्ट्र के लिए जैन जातीयता को भी अस्वीकार कर दिया है और उनके पिताजी कई वर्ष पूर्व इस प्रकार की घोषणा भी कर चुके हैं। अतः हम उनका परिचय यहाँ नहीं दे रहे हैं। लेकिन हमें यह आशा अवश्य है कि भले ही जैन समाज की सीमित सामाजिकता उनको बन्धन प्रतीत हुई हो, जैनत्व तो उन्हें सम्भवतः बन्धन नहीं लगेगा। जैनत्व वह धर्म है जो गांधीजी की विचारधारा के मूल में आज भी स्थिर है और जिसका आशय है अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह और समता।

(आधार—१. महिलाएँ और स्वराज्य, पृ० १७८, ३८४, ३८५ आदि, २. जैन सन्देश, राष्ट्रीय अंक, पृ० ८०, ३. इतिहास की अमरबेल : ओसवाल, २/४३३)

श्रीमती माणिक गौरी

अंकलेश्वर (गुजरात) म्यूनिसिपैलिटी की उपाध्यक्षा रहीं श्रीमती माणिक गौरी गुजरात के प्रसिद्ध गांधीवादी नेता श्री छोटालाल घेलाभाई गांधी की धर्मपत्नी थीं। श्री छोटालाल घेलाभाई गांधी ने अहमदाबाद में एक आश्रिकाश्रम की स्थापना की थी और उसके प्रथम मंत्री रहे थे। जब गांधी जी ने काँग्रेस का सूत्र सम्हाला तब आप पक्के गांधीवादी हो गये और १९१७ में अपने घर पर गांधी जी के हाथों से राष्ट्रीयशाला की स्थापना कराई। १९३३ में नागपुर झण्डा सत्याग्रह आन्दोलन तथा १९३० व ३२ के आन्दोलनों में आपने २ वर्ष की जेल यात्रा की थी। १९४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन में ३ वर्ष की सख्त कैद व १५०० रुपये का जुर्माना हुआ था पर आप सवा वर्ष के बाद ही छोड़ दिये गये थे। श्री गांधी अंकलेश्वर, भड़ौच डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के चेयरमैन, अंकलेश्वर नागरिक सहकारी बैंक के संस्थापक रहे थे।

श्रीमती माणिक गौरी अपने पति के कन्धे से कन्धा मिलाकर स्वतन्त्रता आन्दोलन में

उनका सहयोग करतीं रहीं। शराबबन्दी के लिए प्राणपण से समर्पित गौरी जी स्वयंसेविका तो थीं ही, हजारों स्वयंसेविकाओं को तैयार करने का कठिन काम भी उन्होंने किया था। वे स्वयं सूत काततीं थीं। १९२१ में जब विदेशी कपड़ों की होली जलायी गयी तो उन्होंने अपने पति के कपड़ों के साथ ही अपने २००० रुपये के कपड़े जला दिये और उनसे जो चाँदी (जरी की) निकली, उसे राष्ट्रीय कार्यों के लिए दे दिया। आप लगभग ६ वर्ष अंकलेश्वर म्यूनिसिपैलिटी की उपाध्यक्षा रहीं।

(आधार—जैन सन्देश, राष्ट्रीय अंक, पृ० ८३)

मीराबाई रमणलाल शाह

स्नातक तक शिक्षा प्राप्त मीराबाई रमणलाल शाह अपने विद्यार्थी जीवन से ही स्वतन्त्रता आन्दोलन में सक्रिय हो गयीं। प्रभातफेरी निकालना, गुप्त रूप से बुलेटिन बाँटना आदि उनके प्रमुख कार्य थे। मीराबाई का जन्म पारशीवनी, तालुका-रामटेक, जिला-नागपुर (महाराष्ट्र) में हुआ। १९४२ के 'भारत छोड़ो आन्दोलन' में आपने भाग लिया और विद्यार्थियों का नेतृत्व किया, फलतः आपको गिरफ्तार कर लिया गया और आठ माह जेल के सींखचों में आपको बन्द रहना पड़ा।

(आधार—स्वातन्त्र्य सैनिक चरित्र कोश, विदर्भ विभाग, खण्ड-२, पृ० ७३)

रतनबाई स्वरूपचन्द शहा

महराष्ट्र की प्रसिद्ध स्वाधीनता सेनानी रतनबाई स्वरूपचन्द शहा का जन्म १९१८ में हुआ। ग्राम सांगली, तालुका—मिरज, जिला-सांगली की निवासिनी रतनबाई मात्र १२ वर्ष की उम्र में स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रिय हो गयीं, उन्होंने १९३० के सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लिया, वे पकड़ी गयीं परन्तु बालिका होने से छोड़ दीं गयीं। महाराष्ट्र सरकार ने स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी के रूप में उन्हें सम्मानित किया है।

(आधार—स्वातन्त्र्य सैनिक चरित्र कोश, महाराष्ट्र राज्य, पश्चिम विभाग, खण्ड-३, पृ० ४६६)

श्रीमती राजमती पाटिल

'राजू ताई' या 'राजमती ताई' उपनाम से विख्यात महाराष्ट्र की क्रान्तिकारी महिला श्रीमती राजमती पाटिल का जन्म १९२० में दादा बाजाजी पाटिल के घर ऐतवड़ा (महाराष्ट्र) में हुआ। जब वह छोटी थीं तभी मिट्टी के तेल के डिब्बे पर जलता दीपक रख देने से भभकी आग से उनकी माता का देहावसान हो गया। बालिका राजमती के मस्तिष्क पर इस घटना

का इतना असर पड़ा कि उन्होंने पिताजी और भाइयों का निर्वाह करने के लिए स्वयं विवाह न करने का निश्चय कर लिया। इस निश्चय से पिता के मन में यह विचार आया कि राजमती को शिक्षा ग्रहण कराना अब आवश्यक है, फलतः महाराष्ट्र के प्रसिद्ध महिला शिक्षण केन्द्र 'जैन श्राविकाश्रम' सोलापुर में उन्हें शिक्षार्थ भेजा गया। उस समय आश्रम की संचालिका पण्डिता सुमतबाई शहा थीं।

१९४२ के 'भारत छोड़ो आन्दोलन' के समय राजमती कक्षा सात में पढ़ रहीं थीं। सोलापुर के क्रान्तिकारी श्री कैलाशचन्द्र मेहता की बहिन भी उनके साथ पढ़ रहीं थीं अतः राजमती कैलाशचन्द मेहता और उनके क्रान्तिकारी साथियों श्री छबूसिंह चन्देल, भाई विभूते आदि के सम्पर्क में आयीं। श्री हीराचन्द दोशी, जो उस समय जेल में थे, की पत्नी श्रीमती करतूराबाई भी इसी आश्रम में रहतीं थीं, उन्होंने राजमती को प्रोत्साहित किया, तब राजमती एवं उनकी साथिन बहनों ने दीवार पत्रक (पोस्टर) तथा बुलेटिन तैयार कर बाँटने का काम किया। ६ अगस्त १९४३ को तिलक चौक सोलापुर में आपने तिरंगा झण्डा फहराया, फलतः आपको गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। उधर उनकी गिरफ्तारी से आश्रम की संचालिका नाराज हुईं। आश्रम की बदनामी के डर से राजमती का सामान भी जला दिया गया। राजमती को ११ अगस्त १९४३ को ग्यारह माह की जेल की सजा हेतु येरोड़ा जेल भेज दिया गया। जेल में सौ० लीला पाटिल, डा० उमराव पाटिल की पत्नी एवं सास, श्री नागनाथ नायकवड़ी की माता श्रीमती लक्ष्मीबाई आदि महिलाएँ पहले से ही बन्द थीं। राजमती के अच्छे आचरण को देखते हुए उन्हें ६ माह के बाद ही जेल से मुक्त कर दिया गया। जब वह आश्रम आयीं तो पुलिस के झंझटों से बचने के लिए आश्रम संचालिका ने उन्हें आश्रम में रखने से मना कर दिया।

मई १९४४ में राजमती पाटिल अपने पिता के घर आ गयीं। इधर आन्दोलन को संचालित करने के लिए युवा कार्यकर्ता श्री क्रान्तिसिंह एव नाना पाटिल ने क्रान्तिकारियों को भूमिगत रखकर कार्य करने का निश्चय किया और उनके नौ समूह बनाये। फुंडल समूह के निवृत्ति पाटिल से राजमती की पहचान थी। वे पाटिल के पास गईं, उनके कहने पर राजमती ने स्वेच्छा से क्रान्तिकारियों की मदद करने का दायित्व सम्भाला। एक कुमारी लड़की इस तरह क्रान्तिकारियों के साथ रह रही थी यह किसी आश्चर्य से कम नहीं था। राजमती भूमिगतों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर उनका सहयोग कर रहीं थीं, यहीं उन्होंने हथियार चलाना सीखा। वे क्रान्तिकारियों को खाद्य सामग्री आदि की भी आपूर्ति करतीं थीं। नाना पाटिल, जी० डी० लाड़, अप्पा साहब लाड, नागनाथ नायकवड़ी आदि ने मिलकर तूफान सेना बनायी जिसका लक्ष्य सशस्त्र क्रान्ति करना था। इस हेतु सेना ने लूट के धन से शस्त्र

आदि लाने का विचार किया। अपने कार्यों को अंजाम देने के लिए गोवा से हथियार लाये जाने लगे। गोवा की मुहिम में जी० डी० लाड़, श्री नायकवड़ी के साथ राजमती जातीं थीं। नाकों (चैकिंग पोस्ट) पर दोनों सामान राजमती को देकर स्वयं पृथक्-पृथक् आते थे। देहाती स्त्री को देखकर राजमती की पुलिस तलाशी नहीं लेती थी। इसी तरह कोंडाली से वे कारतूस लेकर महिलाओं के डिब्बे में बैठतीं, साथी अन्य डिब्बों में बैठते। योजना रहती थी कि पकड़े जाने पर कहेंगे कि—'माल हमारा नहीं', पर कभी ऐसा मौका आया ही नहीं।

धन की व्यवस्था हेतु कुंडल समूह ने धूल गाँव के शासकीय खजाने पर डाका डाला। यद्यपि राजमती ने इसमें शामिल होने की जिद की परन्तु साथियों ने महिला होने से उन्हें साथ नहीं रखा तथापि लूट का माल इधर-उधर ले जाने में राजमती ने सक्रिय भूमिका निभायी। जुलाई १९४५ में नायकवड़ी अपने ही एक मित्र राम के मुखबिर बन जाने के कारण गिरफ्तार कर लिये गये तब राजमती ने नायकवड़ी को भगाने की योजना बनायी। योजना सफल हुई और नायकवड़ी ने कर्मवीर भाऊराव पाटिल के घर आश्रय लिया।

जनवरी १९४५ में सभी भूमिगत कार्यकर्ता राजमती के घर थे कि गिलबर्ट को पता लगते ही वह वहाँ आ गया; राजमती से पूछा आप कौन हैं ? उन्होंने कहा 'मैं सुमति हूँ।' गिलबर्ट दूसरी तरफ मुड़ा और राजमती कूद कर भाग गयीं, रेल में बिना टिकट चढ़ीं, अगले स्टेशन पर टिकट लिया परन्तु राजमती का भाई आदगोड़ा पकड़ा गया। अन्य अनेक अवसरों पर राजमती ताई ने अपने कार्यकलापों से क्रान्तिकारियों को सहयोग दिया, वे स्वयं भी बन्दूक चलातीं थीं, बाद में उनकी हत्या का भी प्रयास किया गया पर वे बच निकलीं। डॉ० (सौ०) पद्मजा पाटिल, इतिहास विभाग, शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापुर ने विभिन्न ग्रन्थों के आधार पर श्रीमती राजमती पाटिल का विस्तृत जीवन परिचय, जिसमें उनके क्रान्तिकारी जीवन की ही झाँकी है, मराठी में लिखा है, जो तीर्थंकर (मराठी) में प्रकाशित हुआ था। बाद में राजमती पाटिल ने अपने एक क्रान्तिकारी साथी बलवंत बिरनाले के साथ विवाह कर लिया।

(मूल मराठी से हिन्दी में अनुवाद के लिए हम श्री विनोद जैन एवं श्री नरेन्द्र बड़जात्या छिन्दवाड़ा (म० प्र०) के आभारी हैं।)

(आधार—१. तीर्थंकर, २. प्रगति आणि जिनविजय, २७.९२.९६४, ३. शिवाजी विश्वविद्यालय, इतिहास अध्यापक परिषद् की स्मारिका (१९९६) में प्रकाशित डॉ० पद्मजा पाटिल का आलेख)

स्व० श्रीमती लक्ष्मीदेवी जैन

सहारनपुर (उ० प्र०) की स्व० श्रीमती लक्ष्मीदेवी जैन संविधान निर्मात्री सभा के

सुप्रसिद्ध सदस्य स्व० बाबू अजितप्रसाद जैन की धर्मपत्नी थीं। १९३५ में जब स्वतन्त्रता आन्दोलन विभिन्न रूपों में चल रहा था तब सहारनपुर में महिलाओं के लिए एक 'स्त्रीसमाज' की स्थापना हुई जिसकी लक्ष्मीदेवी प्रमुख कार्यकर्त्री थीं। श्री जैन १९२६ से ही भारत की स्वतन्त्रता की लड़ाई में सक्रिय हो गये थे। पति के कंधे से कंधा मिलाकर आप मातृभूमि को स्वतन्त्र कराने में शामिल हो गयीं। १९४१-४२ के देशव्यापी आन्दोलन में जब आपने जेलयात्रा की तो कुछ महीने की पुत्री भी आपके साथ थी। जैनधर्म की साधना और पूज्य बापू की सहनवृत्ति से प्रेरणा लेनेवाली श्रीमती लक्ष्मीदेवी जैन के सन्दर्भ में प्रसिद्ध साहित्यकार एवं स्वतन्त्रता सेनानी श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' ने जैन सन्देश (जनवरी, १९४७) में लिखा है—"आपका बाहरी परिचय यह कहकर दिया जा सकता है कि आप श्रीमती अजितप्रसाद जैन हैं। पर सच यह है कि यह आपका कोई परिचय ही नहीं है। निश्चय ही यदि श्रीमती जैन का विवाह किसी गरीब अशिक्षित से हुआ होता तब भी वे इतनी ही आदरणीय होतीं जितनी आज हैं। यदि भाई अजितप्रसाद जी का विवाह किसी इंग्लैण्ड रिटर्न बीबी से होता तो आज उनका जीवन कुछ और तरह का होता। यही नहीं ये उनकी सब प्रकार की चिन्ताओं का बीमा हैं, उनका बल हैं, प्रतिदिन जितने और जितने प्रकार के अतिथियों का स्वागत उन्हें करना पड़ता है और उसमें जो सफलता उन्हें मिलती है उस पर ताजमहल होटल का मैनेजर भी ईर्ष्या कर सकता है फिर वह बेचारा ऐसी ममता कहाँ से लायेगा।"

ध्यातव्य है कि बाबू अजितप्रसाद न केवल संविधान निर्मात्री सभा के सदस्य थे अपितु केन्द्र में पुनर्वास, खाद्य एवं कृषिमंत्री, उ० प्र० कॉंग्रेस कमेटी के अध्यक्ष, राज्यसभा सदस्य, केरल के राज्यपाल आदि अनेक पदों पर रहे थे।

(आधार—१. सहारनपुर सन्दर्भ, पृ० १८९-५४४, २. जैन सन्देश, राष्ट्रीय अंक, ३. उत्तर प्रदेश और जैनधर्म, पृ० ८६)

लिलावतीबाई कस्तुरचन्द्र शहा

अक्कलकोट, जिला-सोलापुर (महाराष्ट्र) निवासिनी लिलावतीबाई कस्तुरचन्द्र शहा का जन्म १९२३ में हुआ। १९४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन में उन्होंने सक्रियता से भाग लिया। लिलावतीबाई ने इस आन्दोलन में जन-जागृति का जो कार्य किया वह अविस्मरणीय है। बाद में वे सम्भवतः विधायक भी रहीं और ग्रामोद्योग विकास के लिए उन्होंने काफी काम किया।

(आधार—स्वातन्त्र्य सैनिक चरित्र कोश, पश्चिम विभाग, खण्ड-३, पृ० ५८२)

श्रीमती लीला बहिन एवं रमा बहिन

भारत के स्वतन्त्रता संग्राम की चर्चा क्रान्तिकारी और आजाद हिन्द फौज के संस्थापक नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की चर्चा को बिना अधूरी ही है। १९४२ में जब भारत छोड़ो आन्दोलन जोर पकड़ गया था तभी पूर्वी एशिया में प्रवासी भारतीयों ने अंग्रेजों के विरुद्ध एक दूसरा मोर्चा खोल दिया। भारत में क्रान्तिकारी आन्दोलन को जिस तरह दबाया गया और क्रान्तिकारियों को जिस प्रकार क्रूर सजायें दी गयीं, उसे देखते हुए कई क्रान्तिकारी जापान, चीन, मलाया, बर्मा आदि देशों की ओर चले गये। प्रसिद्ध क्रान्तिकारी रासबिहारी बोस ने भी जापान में शरण ली थी। जिस दिन जापान ने मित्र राष्ट्रों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की उसी दिन टोक्यो में सम्पन्न एक सम्मेलन में रासबिहारी बोस की अध्यक्षता में एक कमेटी गठित की गयी। सम्मेलन में यह भी निर्णय लिया गया कि बर्मा, थाईलैण्ड, मलाया में भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन तेजी से चलाया जाये। बैंकाक में एक पुराने क्रान्तिकारी अमरसिंह ने दिसम्बर १९४१ में 'भारतीय स्वाधीनता लीग' का गठन किया था। मलाया में बसने वाले भारतीयों ने 'इण्डिया इन्डीपेन्डेंस लीग' की स्थापना की जिसके नियन्त्रण में 'आजाद हिन्द सेना' संगठित करने का निर्णय लिया गया। कैप्टन मोहनसिंह इसके कमाण्डर चुने गये। बाद में मोहनसिंह और रासबिहारी बोस के बीच मतभेद पैदा हो गये, इसी समय नेताजी सुभाषचन्द्र बोस भारत से गुप्त रीति से प्रस्थान कर काबुल, रोम आदि होते हुए टोक्यो पहुँचे। रासबिहारी बोस ने सिंगापुर में घोषणा की कि भारतीय स्वाधीनता संग्राम का नेतृत्व अब सुभाषचन्द्र बोस करेंगे।

२६ जून १९४३ को टोक्यो रेडियो से सुभाषचन्द्र बोस ने अपना पहला भाषण प्रसारित किया। बोस ने आजाद हिन्द फौज के नाम की अपील प्रकाशित की—"मेरे सैनिको आपके युद्ध का नारा होगा 'दिल्ली चलो'। आजाद हिन्द फौज भारत की राष्ट्रीय सेना है और यह पूरे तौर से भारतीयों के नियन्त्रण में है। हमारे अभियान में जापानी बाधा डालेंगे या भारत में कोई हस्तक्षेप करेंगे, तो हम उन्हें भी अपना शत्रु मानेंगे। हमारा यह अभियान दिल्ली के लालकिले पर अपना झण्डा फहराकर ही समाप्त होगा, तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा।" इस प्रसारण के बाद सभी ने सुभाषचन्द्र बोस को 'नेताजी' के नाम से सम्बोधित करना शुरू कर दिया। जो लोग फौज में नहीं थे वे धन से या अन्य प्रकार से इस आन्दोलन में सहयोग करने लगे।

ऐसे समय में बर्मा में व्यापार के लिए गये एक प्रख्यात जैन उद्योगपति श्री चतुर्भुज सुन्दर जी दोशी के युवा छोटे भाई श्री मणिलाल दोशी अपना सर्वस्व नेताजी के चरणों में

समर्पित कर आजाद हिन्द फौज में शामिल हो गये। वे फौज में एक दायित्वपूर्ण विभाग के मंत्री रहे। जब बर्मा जापान के अधिकार से निकलकर पुनः अंग्रेजों के अधिकार में आया तो बर्मा सरकार ने आपको गिरफ्तार करके रंगून जेल में डाल दिया। आजाद हिन्द फौज के लगभग कैदी रिहा हो जाने के बाद भी बर्मा की अड़ियल सरकार ने दोशी जी को रिहा नहीं किया, फलतः श्री शरच्चन्द्र बोस के नेतृत्व में एक जोरदार आन्दोलन हुआ और भारत से उनके केस की पैरवी करने के लिए भारतप्रसिद्ध वकील श्री के० एम० मुंशी और नि० के० एफ० नरीमान गये। अन्त में बर्मा सरकार ने दोषी जी को रिहा किया।

इसी तरह जयपुर के डॉ० राजमल कासलीवाल डाक्टरी की सर्वोच्च डिग्री आई० एम० एस० पास करने के बाद सरकार द्वारा फौज को डाक्टरी सहायता देने के लिए लेफ्टिनेन्ट कर्नल के पद पर मलाया भेजे गये। परन्तु आजाद हिन्द फौज का गठन होते ही आप उसमें शामिल हो गये और कुछ समय नेता जी के निजी चिकित्सक और विश्वस्त सहयोगी के रूप में 'डायरेक्टर आफ मेडिकल्स' के पद पर रहे। कासलीवाल जी दिल्ली के लालकिले में मई १९४६ तक बन्द रहे थे। बाद में वे आगरा, जयपुर के मेडिकल कालेजों के प्राचार्य आदि विभिन्न पदों पर रहे थे।

६ जुलाई १९४३ को नेताजी ने एक विशाल जनसभा में महिलाओं को भी आजादी की लड़ाई में भाग लेने के लिए आमन्त्रित किया, फलतः 'रानी झाँसी रेजिमेन्ट' की स्थापना हुई। २३ अक्टूबर १९४३ को सिंगापुर में महिला कैम्प लगा, फिर मलाया व बर्मा के अन्य भागों में भी कैम्प लगे। इनमें महिलाओं को चिकित्सा, नर्सिंग, ड्रिल, नक्शे देखना, युद्ध-तकनीक, शस्त्र-संचालन आदि सेना के सभी क्षेत्रों का प्रशिक्षण दिया जाता था। आजाद हिन्द फौज की अस्थाई सरकार के नौ विभागों में 'नारी कल्याण' भी एक विभाग रखा गया था। यह विभाग लेफ्टिनेन्ट कर्नल व रानी झाँसी रेजिमेन्ट की कमान्डेन्ट लक्ष्मी स्वामिनाथन (सम्प्रति श्रीमती लक्ष्मी सहगल) को दिया गया था। तत्कालीन लोकप्रिय और प्रसिद्ध चिकित्सक डा० प्राणजीवन मेहता की पुत्री रमाबहन और पुत्रवधु श्रीमती लीलावती बहन आजाद हिन्द फौज की 'रानी झाँसी रेजिमेन्ट' में सम्मिलित हो गयीं थीं। जैन सन्देश, राष्ट्रीय अंक, जनवरी, १९४७ ने श्रीमती लीलावती बहन और रमा बहन की कहानी उन्हीं के शब्दों में प्रकाशित की है, जिन्हें हम यथावत साभार यहाँ दे रहे हैं—

श्रीमती लीलावती बहन्—जब ब्रिटिशों ने रंगून छोड़ दिया और जापानियों ने रंगून पर अधिकार जमा लिया तब कुछ समय के लिए अन्धाधुन्धी मच गयी थी। कई मास तक भारतीय स्त्रियाँ घर से बाहर नहीं निकल सकीं थीं। हमने अपने मकान पर एक बोर्ड लगा दिया था जिस पर लिखा था कि 'इस घर में महात्मा गांधी, प० जवाहरलाल नेहरू तथा अन्य भारतीय

नेता आकर उतरे थे। इस घर में नेशनलिस्ट भारतीय रहते हैं।' इसे पढ़कर जापानी सोल्जर हमें कभी किसी भी तरह से हैरान नहीं करते थे।

श्री सुभाष बाबू ने मलाया और बर्मा में आजाद हिन्द फौज और झाँसी की रानी रेजीमेन्ट स्थापित करने के लिए भाषण दिये तब हमारा सारा परिवार उनके 'भारतीय स्वातन्त्र्य संघ' में सम्मिलित हो गया। २१ अक्टूबर १९४३ को बर्मा और मलाया में 'झाँसी की रानी रेजीमेन्ट' स्थापित करने का कार्य पूरा हुआ। रंगून में ५० बालकों को लेकर मेरे हाथ से कैम्प का उद्घाटन हुआ था। जब रात-दिन बम वर्षा होती थी तब भी आवश्यकता होने पर हम खुले मैदान में हथियारों के साथ सुसज्जित होकर खड़ी रहतीं थीं। हम घायलों की सेवा-सुश्रुषा करने और अस्पताल ले जाने का काम करतीं थीं। मेरा मुख्य काम सबेरे ११ से शाम ५ बजे तक घर-घर जाकर स्त्रियों, लड़कियों और पुरुषों को आजाद हिन्द फौज में सम्मिलित होने के लिए समझाना था।

रमाबहिन्—हमारा कैम्प 'मिलिटरी कैम्प' था। उसमें हमें प्रत्येक प्रकार का शस्त्र-संचालन और अनुशासन-पालन सिखाया जाता था। 'झाँसी की रानी रेजीमेन्ट' में दो विभाग थे—एक युद्ध विभाग और दूसरा नर्सिंग विभाग। युद्ध विभाग में हमें मिलिटरी ड्रिल, रायफल प्रेक्टिस, पिस्तौल चलाना, टोमीगन चलाना तथा मशीनगन चलाना सिखाया जाता था। मोर्चे पर आक्रमण करना और आत्मरक्षा करना भी सिखाया जाता था। नर्सिंग विभाग में उक्त शिक्षा प्राप्त बालकों को रखा जाता था।

हमें घायलों की दवा-दारू और सेवा-सुश्रुषा करना सिखाया जाता था। हमें घण्टों खड़े रहकर घायलों की सेवा करनी होती थी। प्रायः सभी बहिनें कैम्प में रहकर काम करने की अपेक्षा युद्धक्षेत्र में जाकर लड़ने को अधिक आतुर रहतीं थीं। वे सब प्रसन्न थीं, इस आशा को लेकर कि उनके द्वारा भारत स्वतन्त्र होगा।

(आधार—जैन सन्देश, राष्ट्रीय, अंक, पृ०-८६)

स्व० श्रीमती लेखवती जैन

जैन जाति की 'सरोजिनी नायडू' कही जाने वाली श्रीमती लेखवती का जन्म उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले के देवबन्द नामक नगर में सन् १९०८ में हुआ था। लेखवती जी का विवाह अम्बाला के श्री सुमतप्रसाद जैन एडवोकेट से हुआ, जो प्रसिद्ध राजनैतिक कार्यकर्ता थे। प्रसिद्ध क्रान्तिकारी महात्मा भगवानदीन और जैन पत्रकारिता के भीष्मपितामह बा० सूरजभान के सान्निध्य में शिक्षित लेखवती जी ने १९३० में कॉंग्रेस में प्रवेश किया था। उन्होंने कॉंग्रेस के लाहौर अधिवेशन में बतौर वालण्टियर काम किया था तथा १९३१ में

शिमला में एसेम्बली पर पिकेटिंग की। श्रीमती जैन ने नमक सत्याग्रह एवं सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भी सक्रिय भाग लिया था।

१९३३ में श्रीमती लेखवती जैन पंजाब प्रान्तीय कौंसिल की मेम्बर चुनी गयीं थीं। सारे हिन्दुस्तान में चुनाव से निर्वाचित पहली महिला सदस्य होने का गौरव उन्हें उस समय प्राप्त हुआ था। आप हरियाणा विधानसभा की डिप्टी स्पीकर (१९७२ में) एवं अम्बाला जिला कॉंग्रेस कमेटी की उपाध्यक्षा भी रहीं थीं। लेखवती जी का पूरा परिवार ही क्रान्तिकारी था। १९३० में उनके पति सुमतप्रसाद जी एवं १९४२ के आन्दोलन में उनका पुत्र जेल के सींखचों में बन्द कर दिये गये थे।

श्रीमती लेखवती जैन का कार्यक्षेत्र यद्यपि राजनीति और समाजसेविका के रूप में था किन्तु राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार और प्रसार में भी आपका योगदान अविस्मरणीय है। हरियाणा हिन्दी साहित्य सम्मेलन की गतिविधियों को सक्रियता आपने ही प्रदान की थी। हरियाणा में अपने कार्यकाल के दौरान हिन्दी को लोकप्रिय बनाने के निमित्त अनेक योजनाएँ आपने प्रारम्भ की थीं। इस प्रकार श्रीमती लेखवती जैन का लम्बा सामाजिक और राजनैतिक जीवन रहा। वह एक जागरूक महिला के रूप में सदा स्मरणीय रहेंगी। अगस्त १९७७ में आपका निधन हो गया।

(आधार—१. जैन सन्देश, राष्ट्रीय अंक, २. दिवंगत हिन्दी सेवी, भाग-१, पृ० ५१८, ३. जैन प्रदीप, पृ० ४६, ४. सहारनपुर सन्दर्भ, पृ० ५३८)

स्व० श्रीमती विद्यावती देवड़िया

महाराष्ट्र विधानसभा की सदस्या तथा लम्बे समय तक नागपुर नगर कॉंग्रेस कमेटी की अध्यक्षा रहीं तथा विदर्भ-गौरव नाम से विख्यात श्री पन्नालाल देवड़िया की धर्मपत्नी श्रीमती विद्यावती देवड़िया का जन्म ६ अगस्त १९०६ को मध्य प्रदेश में सागर जिले के ढाना ग्राम में हुआ। आपके पति श्री पन्नालाल जी समर्पित राष्ट्रीय एवं सामाजिक कार्यकर्ता थे। देशभक्त पति श्री देवड़िया की प्रेरणा से विद्यावती जी ने १९२९ में स्वतन्त्रता संग्राम आन्दोलन में प्रवेश किया। आन्दोलन के समय जिस लगन और धैर्य का आपने परिचय दिया वह नारी जगत् के लिए गौरव की बात है। राष्ट्रीय आन्दोलनों से जुड़ी होने के कारण आप अनेक बार जेल गयीं और स्वतन्त्रता संघर्ष में अनेक कष्ट उठाये।

देवड़िया दम्पति ने स्वतन्त्रता संग्राम के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया था। सत्याग्रह और आन्दोलन में भाग लेने वाले हर व्यक्ति को ये अपने परिवार का सदस्य बना लेते थे। दूसरे शब्दों में उनका पूरा घर और उसकी एक-एक चीज सत्याग्रही वीरों के लिए

अर्पित थी। सेनापति आवारी द्वारा संचालित प्रसिद्ध 'झण्डा सत्याग्रह' में इसकी एक झलक मिलती है। उस समय श्रीमती विद्यावती का घर प्रदेश भर से आये हुए सत्याग्रहियों का निवास स्थान बन गया था। एक ओर विद्यावती जी सत्याग्रहियों के खाने-पीने की व्यवस्था करने में माता की तरह जुटी रहतीं थीं, दूसरी ओर पन्नालाल जी को भी बाह्य स्थिति के अध्ययन, सत्याग्रह की कार्यदिशा के निर्धारण और सत्याग्रह की सफलता की योजना बनाने में सहयोग दिया करतीं थीं।

विदुषी, धर्मपरायणा विद्यावती जी कवियित्री और लेखिका भी थीं। राष्ट्रीय आन्दोलनों के दिनों में एक बार विद्यावती जी ने अपने मधुर स्वर से स्वरचित राष्ट्रीय गीत गाया तो सुनने वाले विभोर हो उठे थे। उस राष्ट्रीय कविता के भाव एवं प्रस्तुति से प्रभावित बैरिस्टर अभ्यंकर ने अनेकों बार विद्यावती के सम्मुख रखकर कहा था—"तुम मुझसे छोटी हो किन्तु मैं तुममें महानता के दर्शन करता हूँ और तुम्हें प्रणाम करता हूँ।" इतने बड़े नेता द्वारा सार्वजनिक रूप से इतनी प्रशंसा पाकर विद्यावती दुगने उत्साह से स्वाधीनता संग्राम में कूद पड़ीं। लेखिका के रूप में आप जैन महिलादर्श आदि पत्रिकाओं में नियमित रूप से लिखा करतीं थीं। आपने मराठी के प्रसिद्ध 'उमाजी नाइक' नामक नाटक का सफल हिन्दी रूपान्तर भी किया था, जिसे 'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' ने प्रकाशित किया था।

श्रीमती देवड़िया को स्वतन्त्रता आन्दोलन में सर्वप्रथम सन् १९३२ में २ माह के कठोर कारावास तथा ५०० रुपये जुर्माना या ६ सप्ताह के कारावास की सजा हुई थी। उस समय नागपुर नगर से वे ही एकमात्र साहसी महिला थीं, जिन्होंने महात्मा गांधी के नेतृत्व में छिड़े स्वाधीनता संग्राम में पूरे उत्साह से भाग लिया था। राष्ट्रपिता महात्मागांधी उन्हें अपनी बेटी की तरह मानते थे, यही कारण था कि जब उन्होंने व्यक्तिगत सत्याग्रह प्रारम्भ किया तो श्रीमती देवड़िया का चुनाव एक महिला सैनिक के रूप में किया था। विद्यावती जी पैदल सत्याग्रह के लिए चल पड़ने वाले प्रथम जत्थे की नेता थीं। उनकी लोकप्रियता के कारण बड़ी संख्या में नर-नारी और बच्चे दूर-दूर तक उनके पीछे चलते गये। सत्याग्रही महिलाओं के जत्थे को होशंगाबाद में गिरफ्तार कर लिया गया। इस व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन में श्रीमती विद्यावती को ६ माह की सजा सुनायी गयी और नागपुर की सेन्ट्रल जेल में रखा गया। जेल से छूटने के बाद उन्होंने महात्मा गांधी के कार्यक्रमों को जारी रखा। १९४२ के 'भारत छोड़ो आन्दोलन' में भी आप सक्रिय रहीं, फलतः आपको गिरफ्तार कर लिया गया और एक वर्ष तक जबलपुर जेल में रखा गया।

श्रीमती देवड़िया नगर के सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक जीवन से पूरी तरह जुड़ी रहीं और इन सभी क्षेत्रों में प्रशंसनीय कार्य किये। वे नगर कॉंग्रेस कमेटी

की निर्विरोध अध्यक्ष चुनी गयीं और एक लम्बे समय तक सफलतापूर्वक कार्य किया। काँग्रेस में आपकी स्थिति सम्मानजनक थी। अनेक उलझी हुई समस्याओं को आप अपनी अद्‌भुत क्षमता से सहज की सुलझा देतीं थीं। काँग्रेस से सम्बन्धित नागपुर की अनेक समस्याओं को देवड़िया दम्पति ने सुलझाने में विशेष योगदान दिया था। उस समय प्रदेश में कोई भी राष्ट्रीय कार्य ऐसा नहीं हुआ जिसमें देवड़िया दम्पति ने भाग न लिया हो। १९५२ के विधानसभा चुनाव में आप विधानसभा की सदस्या चुनीं गयीं थीं। तत्कालीन मुख्यमंत्री पं० रविशंकर शुक्ल, गृहमंत्री पं० द्वारकाप्रसाद मिश्र आदि इस दम्पति को हमेशा सम्मान देते थे।

सामाजिक दृष्टि से विद्यावती जी एक क्रान्तिकारी महिला थीं। पुराने अंधविश्वास को ठुकराकर नये आवश्यक रीति-रिवाज को अपनाने में वे सदा आगे रहीं। अपरिग्रह, दानशीलता, परोपकार, दुःखियों की सेवा एवं सहायता के लिए श्रीमती देवड़िया हमेशा याद की जायेंगी। विद्यावती जी सक्रिय राजनीति से संन्यास लेने के बाद समाज सेवी कार्यों में हिस्सा लेने लगीं थीं। उन्होंने अपने देशभक्त पति के देहान्त के बाद अपनी लाखों की जायदाद राष्ट्र एवं जनहित के लिए दान दे दी थी। 'पन्नालाल देवड़िया काँग्रेस भवन', 'विद्यावती देवड़िया प्रसूति-गृह', 'देवड़िया कन्या शाला', 'देवड़िया हाईस्कूल' आदि आपके कीर्ति–कलश हैं जो आज राष्ट्र एवं समाजसेवा में रत हैं। नागपुर यूनिवर्सिटी को 'पन्नालाल देवड़िया स्कॉलरशिप फंड' हेतु आपने पच्चीस हजार रुपये दान दिये थे ताकि गरीब विद्यार्थियों को शिक्षावृत्ति का लाभ मिल सके। अनेक धार्मिक संस्थाएँ भी आपके द्वारा दिये दान से आज भी संचालित हैं।

सन् १९६२ में भारत-चीन युद्ध के समय जब देश पर संकट के बादल छाये थे तब आपने अपने सारे सोने के आभूषण जो ६७ तोले थे, भारतीय सुरक्षा कोष में दान दे दिये थे।

६ जनवरी, १९८१ को आपका देहावसान हो गया। विद्यावती जी के सन्दर्भ में श्री कपूरचन्द जैन 'साहित्यरत्न' ने जो लम्बी कविता लिखी है उसके कुछ अंश यहाँ हम साभार दे रहे हैं–

विद्यावती महान थीं
जनसेवा की उपमान थीं
निज देश-जाति की आन थीं
वीरांगणियों की शान थीं
विद्यावती.....
जब सत्याग्रह में जेल मिला
जीवन का अनुपम खेल मिला
निज मातृभूमि की सेवा कर
आजादी का सोपान थीं
विद्यावती.....
प्रिय स्मारक काँग्रेस भवन
विद्या-विद्यालय कीर्ति चयन
बहनों के लिए सूतिका गृह
वे नये-नये अभियान थीं
विद्यावती.....

(आधार–१. परवार जैन समाज का इतिहास, पृ० ४४८, २. नया खून, नागपुर, २७ मई, १९६०, ३. 'नवभारत' नागपुर से सम्बद्ध श्री शैलेन्द्र कुमार द्वारा लिखित परिचय-पुस्तिका, ४. श्री भरत देवड़िया द्वारा प्रदत्त परिचय, ५. जैन सन्देश, राष्ट्रीय अंक)

विमलाबाई गुलाबचन्द्र शहा

महाराष्ट्र की सक्रिय कार्यकर्त्री और स्वदेशी की प्रबल समर्थक विमलाबाई गुलाबचन्द्र शहा का जन्म सोलापुर (महाराष्ट्र) में हुआ। मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त विमलाबाई ने १९३० के सत्याग्रह आन्दोलन में खुलकर भाग लिया, उन्होंने विदेशी वस्त्रों की होली जलायी और स्वदेशी वस्तुओं के विक्रय का प्रचार किया। विमलाबाई ने घर-घर जाकर गुप्त रूप से बुलेटिन बाँटे। बहुत प्रयत्न करने पर भी पुलिस उन्हें गिरफ्तार नहीं कर सकी। हैदराबाद आन्दोलन में निर्वासित व भूमिगत क्रान्तिकारियों की उन्होंने विशद रूप से सहायता की थी। इस समय वे स्वयं भी भूमिगत रहीं थीं।

(आधार–स्वातन्त्र्य सैनिक चरित्र कोश, पश्चिम विभाग, खण्ड-३, पृ० ५८२)

श्रीमती सज्जन देवी महनोत

नगर-नगर, गाँव-गाँव में इस बात की होड़ थी कि आजादी की लड़ाई में हम किसी से पीछे न रहें। उज्जैन के प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी श्री सरदारसिंह महनोत की धर्मपत्नी भी भला ऐसे समय में पीछे कैसे रहतीं। अपने पति के कंधे से कंधा मिलाकर स्वाधीनता संग्राम में जो योगदान श्रीमती महनोत ने दिया, वह अविस्मरणीय है। श्रीमती सज्जनदेवी महनोत का जन्म सन् १९०४ के आसपास ग्वालियर राज्य के राजप्रतिष्ठित श्री सगुनचन्द भंडारी के यहाँ हुआ। तत्कालीन पर्दाप्रथा, दिखाऊ कुलीनता की आपने परवाह नहीं की और मिडिल तक शिक्षा ग्रहण की। १९३० के आन्दोलन में सरकारी आदेश की अवहेलना कर आप चार

माह जेल में बन्द रहीं। १९३२ के सत्याग्रह में आपने पुनः जेलयात्रा की और १९४२ के राष्ट्रव्यापी आन्दोलन में भी सक्रिय भूमिका निभायी। इस आन्दोलन में अनेक बार अंग्रेजी शासन ने आपको गिरफ्तार किया और विवश होकर छोड़ा। १९४३ में आपको सरकार ने नजरबन्द किया और लम्बे समय बाद १९४६ में मुक्त किया। आपके पुत्र श्री राजेन्द्र कुमार महनोत और भतीजे श्री ताजबहादुर महनोत ने भी जेल की दारुण यातनायें सहीं।

(आधार–१. जैन सन्देश, राष्ट्रीय अंक, पृ० १०, २. इतिहास की अमरबेल : ओसवाल, भाग-२, पृ० ३६०)

श्रीमती सरलादेवी साराभाई

१९३० में गांधी जी के दाण्डी मार्च में महिलाओं का नेतृत्व करने वालीं तथा कस्तूरबा स्मारक ट्रस्ट की संचालिका रहीं, श्रीमती सरलादेवी साराभाई का जन्म १८८६ में राजकोट (गुजरात) में हुआ। आपके पिता श्री हरिलाल गोसालिया सरकारी सेवा में थे और उनका स्थान-स्थान पर स्थानान्तरण होता रहता था, अतः सरलादेवी का क्रमबद्ध अध्ययन नहीं हो सका, पर उनके पिता घर पर शिक्षक रखकर उन्हें पढ़वाया करते थे। स्वाध्याय में रुचि होने के कारण भी उन्होंने काफी ज्ञान अर्जित कर लिया। १९१० में सरलादेवी का विवाह श्री अंबालाल साराभाई से हुआ। श्री अंबालाल साराभाई एक सम्पन्न जैन परिवार से थे। अंबालाल जी ने विलायत में कपड़ा उद्योग का गहरा अध्ययन किया था, उनके नेतृत्व में अनेक उद्योग लगे। १९०८ में आप अहमदाबाद मिल-मालिक संगठन के अध्यक्ष चुने गये थे। ब्रिटिश सरकार ने आपको 'कैसरे हिन्द' स्वर्ण पदक से सम्मानित किया था। १९१५ के आसपास अंबालाल जी पूज्य बापू के सम्पर्क में आये। गांधी जी के असहयोग आन्दोलन के समय १९३० में आपने उक्त पदक सरकार को लौटा दिया था। गुरुवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, प्रसिद्ध चित्रकार श्री गगनेन्द्रनाथ एवं अवनीन्द्र नाथ टैगोर, नन्दलाल बोस, जगदीशचन्द्र बसु आदि से आपके व्यक्तिगत सम्पर्क थे। गांधी जी के सम्पर्क में आने पर अंबालाल जी उनके एक तरह से शिष्य हो गये। वे जाति-पाँति के इतने विरोधी हो गये कि राष्ट्र के लिए उन्होंने जैन जातीयता को भी अस्वीकार कर दिया।

१९१४ में सरलादेवी ने मान्टेसरी शिक्षण पद्धति का देश-विदेश में अध्ययन कर मान्टेसरी शाला चलायी। पूज्य बापू से अंबालाल जी का घनिष्ठ परिचय होने के कारण सरला देवी उनसे प्रभावित हुईं। १९२० में जब रवीन्द्रनाथ टैगोर साहित्य परिषद् के समारोह में अहमदाबाद आये तो अंबालाल जी के घर ठहरे तभी से सरलादेवी दोनों (पूज्य बापू और टैगोर) से घनिष्ठ रूप से जुड़ गयीं। स्वतन्त्रता आन्दोलन में भी वे सक्रिय हो गयीं। उनमें अद्‌भुत शक्ति थी इसलिए १९३० में गांधी जी की दांडी यात्रा में महिलाओं का नेतृत्व उन्हें

सौंपा गया। विदेशी वस्त्रों की दुकानों पर धरना देनेवाले जत्थों का भी वह नेतृत्व करतीं थीं।

श्रीमती सरलादेवी, मोरारजी देसाई के साथ भी आन्दोलन में सक्रिय रहीं। वह गुजरात समिति की ओर से काँग्रेस डिक्टेटर भी नियुक्त हुईं थीं। गांधी जी के रचनात्मक कार्यों व उनके सन्देशों के प्रचार-प्रसार में सरलादेवी जीवन पर्यन्त लगीं रहीं।

१९४२ में सरलादेवी की पुत्री का देहावसान हो गया अतः वह चाहकर भी 'भारत छोड़ो आन्दोलन' में सक्रिय भाग नहीं ले सकीं। या के निधन के बाद गठित हुए 'कस्तूरबा स्मारक ट्रस्ट' का संचालन उन्हें सौंपा गया जिसका सफल संचालन उन्होंने किया। 'साबरमती आश्रम ट्रस्ट' से भी वे घनिष्ठ रूप में जुड़ी रहीं। जब उन्हें संसद के लिए टिकट देने की पेशकश की गयी तो उन्होंने विनम्रतापूर्वक इनकार कर दिया। उनकी पुत्री मृदुला बेन साराभाई का जन्म १९१९ में हुआ जो आगे चलकर भारत के स्वाधीनता संग्राम में मील का पत्थर सिद्ध हुईं

(आधार–१. महिलायें और स्वराज्य, पृ० १७७, ३८४, २. जैन सन्देश, राष्ट्रीय अंक, ३. इतिहास की अमरबेल : ओसवाल, २/४३३)

श्रीमती सरस्वती देवी रांका

श्रीमती सरस्वती देवी रांका स्वाधीनता संग्राम की वे महिला हैं जिन्हें पीहर और ससुराल दोनों ही जगह राष्ट्रीयता विरासत में मिली। पीहर में उनके चाचा श्री सरदारसिंह महनोत, चाची श्रीमती सज्जनदेवी महनोत, भाई श्री राजेन्द्र कुमार महनोत एवं ताजबहादुर महनोत सभी जेलयात्री रहे और एक बार नहीं अनेकों बार जेल की दारुण यातनायें उन्हें सहन करनी पड़ीं।

ससुराल ब्याहकर आयीं तो वहाँ का वातावरण भी पूरी तरह देशप्रेम से ओतप्रोत था। उनके जेठ श्री पूनमचन्द रांका (जन्म १९०० ई०) प्रत्येक आन्दोलन (लगभग ६-७ बार) में जेल में रहे। वे प्रान्तीय काँग्रेस कमेटी के अध्यक्ष व १९४० के आसपास अ० भा० काँग्रेस कमेटी के सदस्य रहे थे। पूनमचन्द जी पूज्य बापू के अत्यन्त प्रिय कार्यकर्ताओं में से एक थे। जेठानी श्रीमती धनवती बाई रांका आन्दोलन में अनेकों बार जेल गयीं व खादी-चरखे को अपने जीवन का प्रमुख अंग बनाने वाली थीं।

असहयोग आन्दोलन के समय सरस्वती देवी दो बार जेल गयीं। विदेशी कपड़ों की दुकानों पर पिकेटिंग करने के लिए आपने कई बार जत्थों का नेतृत्व किया था। १९३० के नमक सत्याग्रह में आप अत्यधिक सक्रिय रहीं थीं। नागपुर नगर में समाजसेवा में भी आप

अग्रणी थीं। असमय में ही आपका निधन हो गया।

(आधार—इतिहास के अमरबेल : ओसवाल, २/३७३)

सरस्वतीबाई छगनलाल शहा

मूलतः कर्नाटक निवासिनी और सोलापुर (महाराष्ट्र) प्रवासिनी सरस्वतीबाई छगनलाल शहा का जन्म मूडबिदी, तालुका-कारवल, जिला-साउथ कनारा में १९०८ ई० में हुआ। संस्कृत काव्यतीर्थ तक शिक्षा प्राप्त सरस्वतीबाई ने १९४२ के 'भारत छोड़ो आन्दोलन' में सक्रियता से भाग लिया, फलतः उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हें कठोर जेल-यातनाएँ दी गयीं। १०० रु० का अर्थदण्ड भी उन्हें दिया गया परन्तु उन्होंने अर्थदण्ड जमा नहीं किया, जिससे २ माह और कारावास में रहना पड़ा। महाराष्ट्र शासन ने इन्हें सम्मान पत्र प्रदान कर सम्मानित किया है।

(आधार—स्वातन्त्र्य सैनिक चरित्र कोश, पश्चिम विभाग, खण्ड-३, पृ० ५९३)

समाधिस्थ आर्यिका सर्वतीबाई या सरस्वती देवी

आर्यिका सर्वतीबाई का जन्म १९०० ई० के आसपास हुआ। आपके पिता का नाम श्री सांवलदास था। शादी के कुछ दिनों बाद ही वैधव्य का दारुण दुःख आप पर आ पड़ा, अतः आप अपने पिता के घर रहने लगीं। राष्ट्रीयता की भावना आपमें जन्मजात थी ही, पति के निधन के बाद आपने देशसेवा का निश्चय किया और विभिन्न आन्दोलनों में सक्रिय भाग लिया, जिसके कारण आपको दो बार जेलयात्रा करनी पड़ी। आपने अन्य महिलाओं को भी इन आन्दोलनों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया था। देशप्रेम के साथ-साथ हृदय में विद्यमान धार्मिक संस्कार आपको सभी धार्मिक कार्यों में हमेशा भाग लेने के लिए प्रेरित करते रहते थे। एक बार एक मुनि संघ आगरा आया। आपने मुनिश्री के प्रवचनों को ध्यानपूर्वक सुना और वैराग्य धारण कर लिया। कहते हैं कि आप दीक्षा लेने से पूर्व अपने पिता के घर तक तो गयीं, परन्तु बाहर से ही आवाज देकर कह दिया कि 'मैं दीक्षा ग्रहण कर रही हूँ।' दीक्षोपरान्त आपने अनेक स्थानों पर भ्रमण कर आत्मकल्याण के साथ जैनधर्म के प्रचार-प्रसार में महती भूमिका निभायी।

(आधार—१. उत्तरप्रदेश और जैनधर्म, पृ० ६३, २. जैन सन्देश, राष्ट्रीय अंक, ३. पल्लीवाल जैन इतिहास, पृ० १२५ तथा १४२, ४. श्री महावीर प्रसाद जैन, अलवर द्वारा प्रेषित परिचय)

पण्डिता सुमतिबेन नेमचन्द्र शाह

म्युनिसिपल बोर्ड सोलापुर (महाराष्ट्र) की उपाध्यक्षा तथा जैन महिलादर्श और

श्राविका (मराठी) जैसी महिला-पत्रिकाओं की सम्पादक रहीं पण्डिता सुमतिबेन नेमचन्द शाह का जन्म सुसम्पन्न उच्चशिक्षित परिवार में महाराष्ट्र में हुआ। बी० ए० न्यायतीर्थ, काव्यतीर्थ जैसी परीक्षायें उत्तीर्ण कर आप समाजसेवा के क्षेत्र में आयीं और स्त्री-शिक्षा के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य किया। महाराष्ट्र की श्राविका संस्था से लगभग ४० वर्ष सम्बद्ध रहीं पण्डिता जी ने १९३० में स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लिया। शहर में मार्शल लॉ होने पर भी महिलाओं को संगठित कर आपने अद्भुत संगठन क्षमता का परिचय दिया। महिला नगर शोभा की संगठना भी आपने की थी। लगभग १२ पुस्तकों की लेखिका पण्डिता जी 'गांधी जन्म शताब्दी महोत्सव', सोलापुर की अध्यक्षा रहीं थीं। सरकार द्वारा अनेकों बार आपको सम्मानित किया जा चुका है।

(आधार—विद्वत् अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ० ५१४)

स्व० श्रीमती सुन्दर देवी जैन

१९४२ के 'भारत छोड़ो आन्दोलन' में भाग लेने के साथ ही हिन्दी काव्याकाश में एक नई तारिका के रूप में उदित श्रीमती सुन्दर देवी, धर्मपत्नी श्री शिखरचन्द जैन का जन्म ६ दिसम्बर, १९२५ को कटनी, जिला-जबलपुर (म० प्र०) में हुआ। परिवार का वातावरण देशप्रेम की भावना से पगा हुआ था। सौभाग्य से जबलपुर के जिस परिवार में वे ब्याही गयीं वह भी देशप्रेम और त्याग भावना के लिए प्रसिद्ध था, फलतः पैतृक संस्कारों से मिली देशभक्ति और त्याग की भावना ससुराल में भी फलने-फूलने लगी। १९४२ के आन्दोलन में सुन्दर देवी ने भाग लिया। वे अपनी कविताओं से लोगों में देशप्रेम की भावना भरने लगीं। तभी आपकी काव्य-प्रतिभा भी प्रकाश में आयी। घूँघट आपको बुन्देलखण्डी संस्कारों का वैभव था, फलतः अत्यन्त मधुर कण्ठ से कवि सम्मेलनों में कविता पाठ करते समय आपका घूँघट लम्बा हुआ करता था।

आपकी रचनायें 'सन्मति सन्देश', 'नवभारत', 'युगधर्म', 'नई दुनिया', 'मध्यप्रदेश सन्देश' आदि अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती थीं। 'आधुनिक जैन कवि' (१९४४) में आपकी रचनायें सपरिचय संगृहीत हैं। 'पीयूष-कलश' आपका प्रकाशित काव्य-संग्रह है। आपकी रचनायें संवेदना के सूक्ष्मतम स्तरों को छूती हैं। ७ दिसम्बर, १९७९ को आपका निधन हो गया। आपकी स्मृति में रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर की स्नातक परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को प्रतिवर्ष 'श्रीमती सुन्दर देवी जैन स्वर्ण पदक' दिया जाता है।

आपकी 'ओ देश नींद से जाग' कविता 'पीयूष कलश' से हम साभार यहाँ दे रहे हैं-

कांप उठा धरती का कण-कण धधके अंगारे मतवाले।
ज्वालामुखी धरा कांपी फुंकार रहे थे फण वाले।।
नव सर्जन की है तैयारी इक सरिता के दो फूल मिले।
इक ओर खड़ी है मानवता इक ओर पाप के फूल खिले।।
है अशान्ति भारत में फिर से चमक रही चिनगारी आज।
ओ देश नींद से जाग ! जाग !
जो स्वतन्त्रता को निकल पड़े उनको तोपें क्या गोली क्या।
जो श्रोणित का रंग खेल चुके उनको नीरस यह होली क्या।।
जो प्यार देश को बता गया वह भूतल पर इंसान बना।
जो आजादी को झेल गया भारत माँ का वह लाल बना।
पहिन अंहिसा का बाना दे गया विश्व को अमिट प्यार।।
ओ देश नींद से जाग ! जाग !

(आधार—१. दिवंगत हिन्दी सेवी, प्रथम खण्ड, पृ० ६३२, २. आधुनिक जैन कवि, पृ० ५२, ३. पुत्र श्री राजकुमार जैन द्वारा प्रेषित परिचय)

"मैं नहीं सारा राष्ट्र जैन है": श्रीमती इन्दिरा गांधी

बात फरवरी, १९८१ की है। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी श्रवणबेलगोला में भगवान् बाहुबली महामस्तकाभिषेक समारोह के अवसर पर अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित कर दिल्ली लौट आई थीं। संसद में बहस के दौरान कुछ संसद सदस्यों ने उनकी इस यात्रा पर आपत्ति की तो श्रीमती गांधी ने कहा-"मैं महान् भारतीय विचारों की एक प्रमुख धारा के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करने वहाँ गई थी। जिसने भारतीय इतिहास व संस्कृति पर गहरा प्रभाव छोड़ा है और स्वतन्त्रता संग्राम में अपनाए गए तरीकों भी इससे प्रभावित हुए हैं। गांधी जी भी जैन तीर्थंकरों द्वारा प्रतिपादित अहिंसा व अपरिग्रह के सिद्धान्तों से प्रभावित हुए थे।"

इस पर एक संसद सदस्य ने व्यंग करते हुए प्रश्न किया कि-'क्या आप जैन हो गई हैं?' तब श्रीमती गांधी ने गर्जना के साथ उत्तर दिया-"केवल मैं ही नहीं सारा राष्ट्र जैन है, क्योंकि हमारा राष्ट्र अहिंसावादी है और जैन धर्म अहिंसा में विश्वास रखता है। जैन धर्म के आदर्श के रास्ते को हम नहीं छोड़ेंगे।" यह सुनकर प्रश्नकर्ता बगलें झाँकने लगे।

'पूर्ण स्वराज्य कहने में आशय यह है कि वह जितना किसी राजा के लिए होगा उतना ही किसान के लिए, जितना किसी धनवान-जमींदार के लिए होगा, उतना ही भूमिहीन खेतिहर के लिए, जितना हिन्दुओं के लिए, उतना ही मुसलमानों के लिए, जितना जैन यहूदी और सिक्ख लोगों के लिए होगा उतना ही पारसियों और ईसाइयों के लिए। उसमें जाति-पाँति, धर्म अथवा दरजे के भेदभाव के लिए कोई स्थान नहीं होगा।' -म० गांधी 'पूर्ण स्वराज्य का अर्थ'

स्त्रियाँ राजनैतिक क्रान्ति में भाग लें या नहीं ?

जैन समाज की प्रसिद्ध महिला पत्रिका 'जैन महिलादर्श' ने 'आज की एक विकट समस्या' स्तम्भ प्रारम्भ किया था। अगस्त, १९४६ के अंक का विषय था—'स्त्रियाँ राजनैतिक क्रान्ति में भाग लें या नहीं ?' इस पर आये हुए अनेक निबन्धों में विजया देवी जैन, जगाधरी का निबन्ध सर्वोत्कृष्ट पाया गया था और उन्हें २५ रुपये का पुरस्कार दिया गया था। उक्त निबन्ध हम अविकल यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं—

भारत न सहेगा हरगिज गुलाम-खाना,
आजाद होगा, होगा, आता है वह जमाना।
यह जेल औ' दमन की परवाह है अब किसको,
हँसते-हँसते होगा फाँसी पर झूल जाना।।

आह ! कवि ने क्या ही मार्मिक शैली से भारत की वर्तमान राजनैतिक जागृति का वर्णन किया है। आज भारत पराधीन है, निरक्षर है, भूखा है, नंगा है। परन्तु इस हालत में भी उसकी आजादी की भूख नहीं दबी। जमाने बदल गये। उनके साथ यातावरण में भी परिवर्तन हुए। मनुष्यों की विचारधाराएँ भी बदलीं। बहुत सी पुरानी वस्तुओं की जगह नवीन बातों ने अपना आधिपत्य जमाया। लेकिन यह सब होने पर भी जमाना हमारी आजादी की भावना को न बदल सका। आज अनेक कष्टों एवं दमनों को सहकर भारत आजादी के मार्ग पर बढ़ता ही जा रहा है। उसके कानों में बालगंगाधर तिलक का यह वाक्य "स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है" गूँज रहा है। हमारी अन्तिम मंजिल आजादी है। उस पर पहुँचकर ही हम दम लेंगे। यह समय हमारे देशका एक बहुत की नाजुक समय है। यह बात देश के प्रत्येक नेता कह रहे हैं। आजादी की मंजिल तय होनेवाली है। सिर्फ एक ही गम्भीर खाई बनी है। धैर्य एवं साहस से इसे पार करना है। आज भारत में जो राजनैतिक जागृति है वह सराहनीय है। बाल-वृद्ध सब ही आजादी के मतवाले हैं। यह युग राजनैतिक क्रान्ति का है। भारत के इतिहास के यह पृष्ठ भावी सन्तान बड़े गौरव एवं चाव से पढ़ेगी। पर बहिनों, क्या हम नारियाँ इस इतिहास में, क्रान्ति में कुछ भी भाग न लेंगी ? क्या संसार एवं भारतीय पुरुषों से हम यही कहलायेंगी कि भारतीय नारी बिल्कुल अबला एवं कूपमण्डूक है। उन्हें अपने देश के उत्थान या पतन से कोई मतलब नहीं है ? नहीं! कभी नहीं ! हम संसार को दिखा देंगी कि हम वही वीर दुर्गा एवं लक्ष्मी की सन्तान हैं। हमारी धमनियों में वही माँ सुभद्रा का रक्त है जिसने अपने सोलह वर्षीय पुत्र को अपने हाथों से सजाकर रणक्षेत्र में भेज दिया था। हम आज भी भारत की इस राजनैतिक क्रान्ति में भाग लेंगी।

जिस तरह गृहस्थी रूपी रथ के दो पहिये नर एवं नारी हैं। दोनों के सहयोग एवं ज्ञान से ही पारिवारिक जीवन सफल है, उसी तरह राजनैतिक क्षेत्र में भी जब तक नारी कदम न बढ़ावेंगी तब तक यह राजनैतिक युद्ध अधूरा है। यह कमी हमारे प्रत्येक नेता महसूस करते हैं। इसी कारण राजनैतिक क्षेत्र में वे नारी को अधिक प्रोत्साहित करते हैं। नारियाँ भी अपने इस मान की आन जिस शान से निभा रहीं हैं यह भी सराहनीय एवं अनुकरणीय है। हमारे सामने श्री कमला नेहरू, कस्तूरबा व सत्यवती देवी के ज्वलन्त उदाहरण मौजूद हैं, जिनकी अन्तिम साँस में भी यही पुकार थी, "भारत हो स्वतन्त्र हमारा।" श्रीमती विजयलक्ष्मी, अरुणा देवी आदि देवियाँ जिस दक्षता से इस राजनैतिक क्रान्ति का नेतृत्व कर रहीं हैं उससे यह स्पष्ट ज्ञात है कि भारतीय नारी की यह अतीत की योग्यता नष्ट नहीं हुई। पुरुषों की यह भावना, कि नारी में राजनैतिक एवं सामाजिक कार्य करने की योग्यता नष्ट हो गयी है, नितान्त गलत सिद्ध हुई।

नारी पुरुषों से अधिक त्याग एवं बलिदान कर सकती है। उसका अन्तःस्थल अत्यन्त कोमल होता है। एक विलासिनी नारी भी क्षणमात्र में पक्की क्रान्तिकारिणी बन सकती है। जिस वक्त भारत के नेता श्री सुभाष बाबू ने सन् १९४४ में रंगून में भारतीयों की एक विराट सभा में यह माँग पेश की कि, 'जो भारत के स्वाधीनता संग्राम में हाथ बँटाना चाहते हैं वे आगे बढ़ें एवं इस प्रतिज्ञा-पत्र पर अपने खून से हस्ताक्षर करें' सारी सभा में सन्नाटा छा गया। इसी समय जो सबसे आगे आयीं एवं इस युद्ध की सामग्री बनीं वे थीं इस शस्यश्यामला भारत की सत्रह वीरांगनायें जिन्होंने अपने रक्त से उस प्रतिज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर किये। बस! फिर क्या था। नारियों का साहस देखकर पुरुषों में भी जोश छा गया एवं थोड़ी सी ही देर में समस्त जनसमूह ने अपने रक्त से उस मातृभूमि के स्वतन्त्रता प्रतिज्ञा-पत्र पर मोहर लगायी। देखा आपने ! नारी के आगे कदम बढ़ाने से पुरुषों में कैसा जोश फैला। इसी कारण तो देश के कोने-कोने से यह आवाज आ रही है कि नारी को राजनैतिक क्रान्ति में अवश्य भाग लेना चाहिए।

अतीत में भारतीय नारी प्रत्येक राजनैतिक कार्य में भाग लेती थी। इस बात का साक्षी हमारा इतिहास है। राजा हर्षवर्धन की बहिन राजश्री भाई के साथ सभाभवन में आतीं थीं एवं राज्य की प्रत्येक समस्या सुलझाने में भाग लेतीं थीं। रानी दुर्गावती व लक्ष्मीबाई ने तो देश के स्वातन्त्र्य युद्ध में तोप एवं गोलेबारी के बीच इस शौर्य एवं दक्षता से तलवार चलायी कि उनके शत्रु भी उनकी योग्यता की सराहना करने लगे। प्राचीन भारत में महाराष्ट्र की अहिल्याबाई, झाँसी की लक्ष्मीबाई व दिल्ली की रजिया बेगम के ज्वलन्त उदाहरण पाये जाते हैं जो कि भारत में अंग्रेजी राज्य से पूर्व इस ऐतिहासिक काल में कुशल शासन करतीं थीं। हम अपने इस भूतकाल की भाँति भविष्य में भी भारतीय नारी के आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करेंगी।

नारी में योग्यता एवं साहस का अभाव नहीं है। उसे तो पुरुषों की उपेक्षा ने ही अबला

बना दिया है। यदि उसे उचित शिक्षा दी जाये एवं उसके छोटे-छोटे महत्त्वपूर्ण कार्यों की हँसी व उपेक्षा न की जावे और उसे उत्साहित किया जावे तो आज भी भारतीय नारी अतीत के नारी इतिहास की पुनरावृत्ति कर सकती है। यह बात भारत के इस राजनैतिक संघर्ष ने स्पष्ट बता दी है। असहयोग आन्दोलन में, नमक कानून तोड़ने में, विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार में, पिकेटिंग व सत्याग्रह में, अंग्रेजी नौकरशाही की गोलियों के सामने सीना खोलकर खड़ी होने में, जेल तक जाने में भी भारतीय नारी नहीं हिचकी। जब श्री सुभाष बोस ने "आजाद हिन्द सेना" की स्थापना की तब उन्होंने "झाँसी की रानी सैनिकाओं की एक रेजीमेन्ट" बनायी एवं "डा० लक्ष्मीनाथन" उस रेजीमेन्ट की सेनानी थीं। इन्हें भी पुरुषों की भाँति युद्ध-शिक्षा दी गयी एवं जब स्वाधीनता संग्राम आरम्भ हुआ तब इनको फील्ड अस्पतालों में घायल सैनिकों की सेवा के लिए नियुक्त किया, पर इन वीरांगनाओं को केवल सेवा से सन्तोष कैसे होता। उन्होंने नेताजी के पास प्रार्थना पत्र भेजा कि, "हम सैनिक शिक्षा प्राप्त कर चुकीं हैं। हमारी शिक्षा सन्तोषजनक रही है। हमें मोर्चे पर जाने की आज्ञा दी जावे।"

नेताजी ने इन्हें बहुत समझाया। युद्ध क्षेत्र की कठिनाइयाँ बतायीं, पर इन वीरांगनाओं का यही उत्तर था, "हम झाँसी की रानी रेजीमेन्ट की सैनिकाएँ हैं। हमारी सेनानी भी 'लक्ष्मी' है। हम अवश्य युद्ध करेंगी।" अन्त में नेताजी ने उन्हें आज्ञा दे दी। इन वीर रमणियों ने १६ घण्टे तक ब्रिटिश फौजों से युद्ध किया, एवं ऐसा विकट कि अन्त में ब्रिटिश फौज को पीछे हटना पड़ा।

मेरी समझ में नहीं आता कि जब भारतीय नारी में इतना साहस, आत्मत्याग एवं ज्ञान है तो वह राजनैतिक क्रान्ति में भाग क्यों न ले ? यदि हममें कुछ अभाव है, कमजोरी है तो इसका यह अर्थ नहीं कि हम योग्य नहीं बन सकतीं। शिक्षा एवं अभ्यास से जो जानवर भी सीख जाते हैं तो क्या हम पशुओं से भी गयी-बीती हैं ? जबकि हमारी कई बहिनें इस स्वातन्त्र्य युद्ध में भाग ले रहीं हैं तो क्या हम उनसे भी शिक्षा नहीं ले सकतीं ? प्रत्येक बहिन इन देवियों को अपने मार्ग का प्रकाश स्तम्भ बनायें एवं आगे बढ़ें, देश की राजनैतिक क्रान्ति में अवश्य भाग लें ताकि हमारी आगामी पीढ़ी गर्व से माथा ऊँचा कर कह सकें कि हमारे भारत में नारियाँ पुरुषों की सच्ची अर्धांगिनी रहीं हैं। पारिवारिक समस्याओं के साथ ही साथ राजनैतिक समस्याओं के सुलझाने में भी उन्होंने अतीत की नारियों की भाँति पुरुषों की सदा सहायता की। बहनों उठो! एवं कवि के इन शब्दों को याद करके आगे बढ़ो। देश की राजनैतिक क्रान्ति में भाग लो।

जिसे न निज गौरव तथा देश का अभिमान है।
वह नर नहीं नरपशु निरा, जीवित मृतक समान है।।

नहीं बनेगा पाकिस्तान

जैन महिलादर्श जैन समाज की अकेली पत्रिका है, जो महिलाओं के कृतित्व को प्रकाशित करती आ रही है। आजादी की लड़ाई में जहाँ पुरुष अपनी कलम को तलवार बनाकर लड़े, महिलायें भी अपनी लेखनी से आग उगलतीं रहीं। जैन महिलादर्श ने समय-समय पर समस्यापूर्ति के रूप में भी आजादी विषयक विषयों को रखा। इस पत्रिका में आजादी (१९४७) से पूर्व प्रकाशित कुछ चुनी हुई रचनाएँ यहाँ हम साभार दे रहे हैं। पत्रिका के वर्ष २५/२, अंक १ दिनांक १५ मई, १९४६ में समस्या रखी गयी थी 'नहीं बनेगा पाकिस्तान'। इसके उत्तर में अनेक पूर्तियाँ आयीं। कुछ महत्त्वपूर्ण पूर्तियाँ यहाँ प्रस्तुत हैं–

दृढ़ प्रतिज्ञ हो हम कहतीं हैं यही हमारी आन।
प्यारा हिन्दुस्तान हमारा, नहीं बनेगा पाकिस्तान।।
अय मुस्लिम भाई, सुनो जरा !
क्या सचमुच देश तुम्हारा है ?
तुमको बसने की भिक्षा दी ?
हमने तो देश हमारा है।।
पाकिस्तान बनाने का तो छोड़ो अब तुम मन से ध्यान।
प्यारा हिन्दुस्तान हमारा, नहीं बनेगा पाकिस्तान।।
बढ़ती ही जातीं हैं हम सब,
आजादी की आन लिये।
कण्टकमय मग में जाती हैं,
आजादी की प्यास लिये।।
जाग उठी हैं नव बालाएँ, चमक उठेगा हिन्दुस्तान।
प्यारा हिन्दुस्तान हमारा, नहीं बनेगा पाकिस्तान।।
गोली की 'औ' तोपों की,
परवाह नहीं है हमें जरा।
बाधाएँ तो आवेंगी ही,
इसका नहिं अफसोस जरा।।
सहना हमको सभी पड़ेगा, सह लें सीना तान।
प्यारा हिन्दुस्तान हमारा, नहीं बनेगा पाकिस्तान।।
कोई समझे हमें न अबला,
कोमल बदन नहीं हैं हम।
अत्याचारी को मेटेंगी,
मुर्दों में रक्त भरेंगी हम।।
वीरों की सन्तान अरे ! हम देंगी तन धन प्राण।
प्यारा हिन्दुस्तान हमारा, नहीं बनेगा पाकिस्तान।।
आजादी पा करके जब,
सकुशल यदि हम लौटेंगी।
ध्वनि जय हिन्द लगायेंगी,
माँ भारत की जय बोलेंगी।।
पशु पक्षी औ वृक्ष लतायें, गावें गीता गान।
सहना हमको सभी पड़ेगा, सह लें सीना तान।।
पर न कभी हम बनने देंगी हिन्दुस्तां को पाकिस्तान।
प्यारा हिन्दुस्तान हमारा, नहीं बनेगा पाकिस्तान।।

–ज्ञानमाला जैन 'क्रान्ति', मुरादाबाद
(अंक २५/२, जून, १९४६)

卐

प्यारा हिन्दुस्तान हमारा, नहीं बनेगा पाकिस्तान।
दुःखी देश का क्लेश मेटने स्वावलम्बन है दिव्य निशान।।
करो मरो के निश्चय से ही हो जायेगा नया विधान।
भारत भारत हो जायेगा नहीं बनेगा पाकिस्तान।।
दिव्य तेज की एक लहर में आता है भाव अहिंसा का।
कच्चे धागों से ही होगा, त्याग भाव नवजीवन का।।
कर्मपरायण गांधी जी ने बतलाया यह शुभ सन्देश।
एक लक्ष्य हो, एक मार्ग हो निरबन्धन को यह आदेश।।
शासन में मजदूर किसान, रहे उसकी ही शक्ति महान्।
प्यारा हिन्दुस्तान हमारा, नहीं बनेगा पाकिस्तान।।

–चमेली देवी संघा
(अंक २५/२, जून, १९४६)

प्यारा हिन्दुस्तान हमारा, नहीं बनेगा पाकिस्तान,
जग से प्यारा देश हमारा है सारी दुनियाँ से न्यारा।
काँग्रेस का जोर हो रहा गांधी और जवाहर सारा,
सुभाष भी लेगा स्थान नहीं बनेगा पाकिस्तान।।
प्यारा हिन्दुस्तान हमारा, नहीं बनेगा पाकिस्तान,
बंगाल में कैसा अकाल पड़ा पर नाजों का कंट्रोल हुआ।
कपड़े का अब भी भारत में कैसा हाहाकार हुआ,
लड़कर लेंगे हिन्दुस्तान नहीं बनेगा पाकिस्तान।।
प्यारा हिन्दुस्तान हमारा, नहीं बनेगा पाकिस्तान।।

—सौ० विमलप्रभा, मुरादाबाद
(अंक २५/२, जून, १९४६)

卐

जुबाँ से लफ़्ज यही निकले, और आहें कितनी आहें।
नहीं आजाद वतन मेरा, बने आजाद यही चाहें।।

फूट लापरवाही ने ही मिला दी मिट्टी में इज्जत।
कि जिससे बसर-बसर से नहीं मिल सका फैलाकर बाहें।।

पर अब कदम न हटने पाये आँधी आवे या तूफान।
प्यारा हिन्दुस्तान हमारा, नहीं बनेगा पाकिस्तान।।

हम सब अगर मिलकर बन जावें रहमदिली मजहब पाबन्द।
काम करें ऐसे जहान के लिए हो सके फायदेमंद।।

इस हिन्दी की आजादी के खातिर ताकत दिली विचार बढ़ाकर।
वक्त करें बेकार खत्म नहीं खर्च फिजूली करदें बन्द।।

इन्साफ करे आजाद बनें औ' हम सब बन जावें इनसान।
प्यारा हिन्दुस्तान हमारा, नहीं बनेगा पाकिस्तान।।

—सरोजिनी देवी जैन
(अंक २५/२, जून, १९४६)

卐

प्यारा हिन्दुस्तान हमारा, नहीं बनेगा पाकिस्तान।
पवित्र भूमि जननी वीरों की खो न सकेगी अपनी शान।।
लीगी यह समझे बैठे हैं, नहीं शक्तिवान हैं हिन्दू प्राण।
विलासी बनकर सम्पत्ति खोई, खो चुके निर्मल सन्तान।।
कला नहीं चातुर्य नहीं है, नष्ट हुआ सत्ज्ञान और मान।
किन्तु शक्ति अवशेष अभी है सोचो लो बुद्धि से काम।।
आत्मशक्ति का तेज शेष है, वही रखेगा जाति मान।
प्यारा हिन्दुस्तान हमारा, नहीं बनेगा पाकिस्तान।।
कायम हिन्दु जाति जब तक कर लेगी कैसे निज हान।
भाई बनकर रहो प्रेम से अनुचित वार्ता से क्या काम।।
सिखस्तान सिखों को चाहिये, मुसलमानों को पाकिस्तान।
फिर वीरस्थान जैन माँगेंगे, सनातनी को विष्णुस्तान।।
निज शरीर के अंग काटकर नहीं रह सकते मानव प्राण।
कर देंगे स्थान जुदा गर बच न सकेगा हिन्दुस्तान।।
पूर्व समय में फूट के कारण चढ़ आया था इंग्लिस्तान।
प्यारा हिन्दुस्तान हमारा, नहीं बनेगा पाकिस्तान।।
गोरांगों की करतूतों पर, दीजिए जिन्ना साहब ध्यान।
कई बार करके अजमाईश, अब अजमाना है बेकाम।।
स्वतन्त्रता के इच्छुक सब हैं, क्या हिन्दू क्या मुसलमान।
किन्तु भला दो दल के रहते, कैसे चढ़ें एक सोपान।।
द्वेषभाव को दूर हटाकर प्राप्त करो अब जय और मान।
प्यारा हिन्दुस्तान हमारा, नहीं बनेगा पाकिस्तान।।

—चन्द्रकुमारी जैन, मुजफ्फरनगर
(अंक २५/२, जून, १९४६)

卐

प्यारा हिन्दुस्तान हमारा,
नहीं बनेगा पाकिस्तान।
अकबर, बाबर, वीर हुमायूँ,
हुए यहाँ सम्राट बड़े।।
वह भी इस अखण्ड भारत के,
कर न सके टुकड़े-टुकड़े।।
किन्तु जिन्ना को क्या सूझी,
खाकर भारत के टुकड़े।
करना चाहे खण्ड-खण्ड सब,
भारत माँ के अंग खड़े।।
किन्तु आपसी झगड़ों से ही,
हो जायेगा खाकिस्तान
हिन्दुस्तान हिन्दुओं का है,
नहीं बनेगा खण्डित धाम।।
प्यारा भारतवर्ष हमारा,
नहीं बनेगा पाकिस्तान।।

—विद्यादेवी
(अंक २५/३, जुलाई, १९४६)

खड़ी द्वार पर जय आजादी

'खड़ी द्वार पर जय आजादी' की पूर्ति में निम्न पूर्तियाँ भी दृष्टव्य हैं—

हम भारत माँ की सन्तान,
हम ही हैं देश की शान;
हम ही हैं 'लक्ष्मी' की आन।
नहीं मिटेगा यह अभिमान।।
चाहे जितना हो बलिदान,
लाखों की भी जाये जान;
पर भारत माँ का हो त्राण।
विजय करें या देवें प्राण।।
लेकर अस्त्र अहिंसा हाथ,
पहिन शुद्ध तन पर खादी;
उठो नारियों विहँस रही है।
खड़ी द्वार पर जय आजादी।।

—कान्तादेवी जैन 'रतन', रेवासा
(अंक २५/२, जून, १९४६)

卐

बहिन उठो आँखें अब खोलो,
प्रेम के रसमें मुख तुम धोलो।
हाथ से चरखा कात-२ कर,
बहिनों को यह काम बताकर।।
बनवा कर पहिनो खादी,
खड़ी द्वार पर जय आजादी।
आजादी को जल्द जगाओ,
बढ़ते—बढ़ते आगे आओ।।
हिन्दुस्तान पे बलि—बलि जाओ,
पाकिस्तान को मार भगाओ।
आज पुकार रही आजादी,
खड़ी द्वार पर जय आजादी।।

—पुष्पलता जैन, तिजारा
(अंक २५/२, जून, १९४६)

卐

खड़ी द्वार पर जय आजादी।।
भारत माता बंधन जकड़ी, कब होगी आजादी।
भारतवासी कण-कण माँगे अन्न वस्त्र की बर्बादी।।
गांधी जवाहर राजेन्द्रबाबू, आजाद भरेंगे आजादी।
जिन्ना की अड़ियल नीति से, लीग बनी है हटवादी।।
पाकिस्तान हटाकरके हम, अखण्ड भारत के पुजवादी।
स्वारथ त्यागो, धर्म निबाहो, जेल भरो जब मिले आजादी।।
भाई, भाईसे मिलकर बोलो,तभी खड़ी द्वार पर जय आजादी।

—कृष्णदेवी चौधरी, उदयपुर
(अंक २५/२, जून, १९४६)

卐

आओ मिलकर करें हिन्द जय,
खड़ी द्वार पर जय आजादी।
ले लो अब हाथों में खञ्जर,
आगे बढ़ती चलो निरन्तर।।
चूम रही है कदम तुम्हारे,
पड़ी राह में जय आजादी।
हिन्दू मुस्लिम द्वेष मिटादो,
हरीजनों से रार मिटालो।।
पाकिस्तान का नाम मिटादो,
बढ़ी आ रही है आजादी।
आओ मिलकर करें हिन्द जय,
खड़ी द्वार पर जय आजादी।।

—विद्यादेवी
(अंक २५/२, जुलाई, १९४६)

भारत बने स्वतन्त्र हमारा

पत्रिका के वर्ष २५ अंक-२, जून १९४६ में समस्या रखी गयी थी—'भारत बने स्वतन्त्र हमारा' इसके उत्तर में आई पूर्तियों में से कुछ पूर्तियाँ यहाँ प्रस्तुत हैं—

भारत बने स्वतन्त्र हमारा, पाकर करुणा करुण पुकार।
पराधीनता की बेड़ी से, क्षणभर में अब हो उद्धार।।
स्वतन्त्रता के शैल शिखर में, उस वीर पुजारी के रखने।
सावन घन गरजा गरजाकर, बतलाया आत्मत्याग करने।।
सन्देश यही उपदेश यही, कहता है अपना देश यही।
बहिनों दिखलाओ आत्मत्याग, जननी का है आदेश यही।।
जब तक स्वतन्त्र यह देश नहीं, तब तक है माँ को चैन नहीं।
मर मिटने का कुछ क्लेश नहीं, कम हो सकता आदेश नहीं।।
गूँज उठे कोने-कोने में, स्वयंसिद्ध अधिकार हमारा।
आत्मत्याग के नव विकास में, भारत बने स्वतन्त्र हमारा।।

—चमेलीदेवी, कटनी।
(अंक २५/३, जुलाई, १९४६)

卐

भारत का सन्देश कि जिसको देश, समझ ले सारा।
भारत बने स्वतन्त्र हमारा।।
सच्ची आजादी पावेंगे, दुनियाँ को सुख दिखलावेंगे।
मिट जावे गुलामी का यह दाग हमारा,
भारत बने स्वतन्त्र हमारा।।
जो परवस होकर रहता है, वह देश सदा दुःख सहता है।
क्यों मरा भूख से यह बंगाल हमारा,
भारत बने स्वतन्त्र हमारा।।
सब भाई बनकर मिल जायें, दुनियाँ को भी गले लगायें।
क्यों पीछे रहा है भारत वर्ष हमारा,
भारत बने स्वतन्त्र हमारा।।

—लीलावती गुप्ता, मुरादाबाद
(अंक २५/३, जुलाई, १९४६)

卐

जगत भूषण भारत देश दिवाकर था,
कमल-पुष्प सा विकसित नन्दन वन था;
भारत ज्योति से आलोकित सारा जग था,
भारत तेज जगत विस्तारा।
भारत बने स्वतन्त्र हमारा।।
इसी देश में प्रगटे गांधी,
दूर भगाई हिंसा गांधी;
क्रान्ति मयी मर्यादा बाँधी,
यश चमका बनकर ध्रुव तारा।
भारत बने स्वतन्त्र हमारा।।
किन्तु आज यह हुआ भिखारी,
धन-दौलत सब लुटी हमारी;
शिल्प-कला बिन है बेकारी,
फिर धन बल संचय हो सारा।
भारत बने स्वतन्त्र हमारा।।
स्वतन्त्रता का दृढ़ निश्चय,
बढ़ो विजय पथ पर हो निर्भय;
बोलो भारत माता की जय,
कर दो अर्पित जीवन सारा।
भारत बने स्वतन्त्र हमारा।।
—सन्तोष, कालका
(अंक २५/३, जुलाई, १९४६)

卐

कैसे सोने को चमकाऊँ,
दिल का कैसे दर्द बताऊँ।
बंधन फिर भी बंधन ही है,
इसमें कैसा हर्ष मनाऊँ।।
मन रहता मनही से न्यारा-
भारत बने स्वतन्त्र हमारा।
आज भारती नष्ट भई है,
लाल लालिमा निकल गयी है।।
शूरवीरता कथा हुई है,
त्राहि-त्राहि की धूम मची है।
मानवता सब दूर गयी है,
दानवता घट छाय रही है।
लोभ मोहता फैल रही है,
अहंकारता आय गयी है।
इसी विदेशी बंधन के वश,
अन्न वस्त्र का नहीं सहारा।।
भारत बने स्वतन्त्र हमारा।।
—सौ० शीलादेवी, पिण्डरई
(अंक २५/३, जुलाई १९४६)

भारत बने स्वतन्त्र हमारा ।।
पुण्यभूमि यह भरतराज की, राणाका गौरव प्यारा,
प्रकृति नटीका क्रीड़ास्थल, तीनों लोकों से न्यारा।
भारत बने स्वतन्त्र हमारा।
गिरि कैलाश हिमालय प्यारा, काश्मीर नैप . हमारा।
गंगा, जमुना और सिन्धु की, बहती है अविरल धारा,
भारत बने स्वतन्त्र हमारा।।
सावरकर, सुभाष ने अपना, तन मन यहाँ चढ़ाया।
इसी देश के लिए भगत ने, फाँसी को अपनाया।।
हम भी कैसे देख सकेंगी, होता !;से पराया।
खून खौल उट्ठेगा तत्क्षण, प्राण तजेंगी काया।।
क्षत्रिय बालाओं ने इस पर, निज तन मन धन वारा।
भारतं बने स्वतन्त्र हमारा।।
—कु० मणिकान्तादेवी जैन, भोपाल (स्टेट)
(अंक २५/३, जुलाई, १९४६)

卐

अहा सुभाष सुधीर हुआ वह।
माँ का कष्ट न देख सका वह।।
सोतों को फिर उसने जगाया।
अहा मधुर रणनाद बजाया।। १।।
गूँज उठी 'कोहमा' वनस्थलि।
अहा हिन्द की गुण गरिमावलि।।
प्रतिध्वनि सुन जागी नारी।
जाग उठी लक्ष्मी सी नारी।। २।।
सब मिल बोलें भारत की जय।
स्वर में वही पुरानी हो लय।।
था वीरों का एक ही नारा।
भारत बने स्वतन्त्र हमारा।।
—विजया जैन, जगाधरी
(अंक २५/३, जुलाई, १९४६)

卐

भारतवर्ष स्वतन्त्र करेंगी।
जीवन का नहीं मोह करेंगी।।
अबला नहीं सबला बनकर।
गांधी जवाहर का साथ निभाकर।।
दुर्गा सीता जैसी बनकर।
रूप चण्डी का धारण कर।।
तन मन धन बलिदान करेंगी।
भारत को स्वाधीन करेंगी।।
यही अटल कर्तव्य हमारा।
भारत बने स्वतन्त्र हमारा।।
—निर्मल जैन, सियालकोट
(अंक २५/३, जुलाई, १९४६)

यह कोमल कलिका है, इसको अभी तोड़ मत माली

पत्रिका के वर्ष २५, अंक ३, जुलाई, १९४६ की समस्या थी–'यह कोमल कलिका है, इसको अभी तोड़ मत माली' इतने कोमल विषय पर भी विदुषी महिलाओं ने 'सुभाषचन्द्र बोस' को आधार बनाकर पूर्ति की–

दहला देता है वीरों को, जिसका एक इशारा।
जिसकी उँगली पर नाचता, है भारत सारा।।
लगी इसी से मेरी आस, जुग-जुग जीये सुभाष प्यारा।
अरि दल का नाशक भारत का वह प्राण-अधारा।।
रणधीर शूरवीर है देखो, उसकी सूरत भोली भाली।
यह कोमल कलिका है, इसको अभी तोड़ मत माली।।
यह 'माँ' का लाडला वीर ऐसा है क्रान्तिकारी।
इस समय देश को बोस की आवश्यकता है भारी।।
करो प्रार्थना 'वीर' प्रभु से सब मिल देशभक्त नर-नारी।
हों जीवित 'सुभाषचन्द्र बोस' पूर्ण हों आशाएँ सारी।।
कोटि-कोटि युग तक जिये, उनकी दुष्टों से हो रखवाली।
यह कोमल कलिका है, इसको अभी तोड़ मत माली।।
वीरों ! भारत का मान रहे, भारत वीरों की खान रहे;
निज देश उन्नति करने को, सबका यह आह्वान रहे।।
उज्ज्वल भारत की शान वही,
दुखिया माता का प्राण वही;
सद्गुण पूरित माँ का साज वही।
उत्थान वही, सर्वस्व वही।।
शीघ्र लौटो, खोलो बन्धन, सम्मुख है आज़ादी की लाली।
यह कोमल कलिका है, इसको अभी तोड़ मत माली।।
—कुमारी 'तिलक' जैन, कालका

आज फिर संसार में सर्वत्र ही सुख–शान्ति छाये

जैन महिलादर्श के ही वर्ष २०, अंक-६ जनवरी, १९४२ के अंक में प्रकाशित–'आज फिर संसार में सर्वत्र ही सुख-शान्ति छाये' समस्या की निम्न दो पूर्तियाँ दृष्टव्य हैं–

(१)

आज युद्ध फैल गया है विश्व के मैदान में।
लाखों भाई मारे जाते युद्ध के दरम्यान में।।
बम्बा भारी होती ख्वारी खराब जहान में।
लेना सुध तुम हमारी आनकी ही शान में।। १।।
जर्मन लड़ता जापान लड़ता, लड़ता सारा जहान है।
एक एक का दुश्मन बनता होता लहुलुहान है।।
क्यों न अभी चेतो प्यारे युद्ध में जहान है।
हिन्द को स्वाधीन करना कर्तव्य महान् है।। २।।
वीर तुमको मैं पुकारूँ भारत में अब आइये।
सोते हुए भारत को आकरके जगाइये।।
शान्ति होगी भारत में तुमरे ही अब आये।
आज फिर संसार में सर्वत्र ही सुख-शांति छाये।। ३।।
—चन्द्रा, सनावद

(२)

प्रलय युद्ध प्रचण्ड विचलित कर रहा भूलोक को है।
चण्डिका फैला रही, चहुँ ओर शोक-विशोक को है।।
गगनबेधी बम्म कहीं विध्वंस करते लोक को हैं।
जीव अगणित जा रहे इस लोक से परलोक को हैं।।
विश्व गांधी के अहिंसावाद को यदि पथ बनाये।
आज फिर संसार में सर्वत्र ही सुख-शांति छाये।।
युद्ध यह पाश्चात्य का अब विश्वव्यापी बन गया है।
और जब जापान अमरीका इसी में सन गया है।।
देश निज चहुँ ओर से आतंकशाला बन गया है।
ज्ञान सारा नष्ट होकर दानवी [illegible] ठन गया है।।
ईश ! मानव प्रेम की सुन्दर 'कली' मुरझा न जाये।
आज फिर संसार में सर्वत्र ही सुख-शांति छाये।।
—रामकली देवी 'कली', धामपुर

नारी बिन अब उठ न सकेगी, उन्नति की पतवार

जैन महिलादर्श में ही प्रकाशित 'नारी बिन अब उठ न सकेगी, उन्नति की पतवार' समस्या की पूर्तियों में से देशभक्ति से ओतप्रोत निम्न पूर्तियाँ भी दृष्टव्य हैं–

लेकर उर में क्रान्ति आग रे, भारत की महिलाओ।
निज बल और पराक्रम से, दुर्गा बन जग में आओ।।
है संचरित रक्त वह जो, सदियों से बहता आया,
गत गौरव को याद करो, जो अमर दीप्त बन भाया।।
क्या खल की ताकत जो, आगे आये पैर बढ़ाये।
वीर सिंहनी दुर्गा हो, जो भी आये झुक जाये।।
तुम तड़िता सी गरज पड़ी हो, कम्पित काल प्रलयंकर।
देख तुम्हारा रुद्र रूप, थर्रा जाये विश्वम्भर।।
सागर की उर्मिल लहरों पर, त्याग सहित बढ़ती जाओ।
स्वल्प प्रानी के लक्ष्य दुर्ग पर साहस से चढ़ती जाओ।।
राष्ट्र समाज तथापि देश की अब तुम हो कर्णधार।
नारी बिन अब उठ न सकेगी, उन्नति की पतवार।।

–कु० लाजवन्तीदेवी जैन, झाँसीपानी
(अंक २४/२, जून, १९४५)

पूर्व नारियों में था जितना, विद्या बल साहस संचार।
उतनी आज बनीं हम कायर, अपना शुभ कर्तव्य बिसार।।
थीं बहनें प्राचीन समय में, धीर वीर गुण की भण्डार।
आज अधीर बनीं उतनी हम, गुण का लेश ? रहा न लगार।।
नारी बिन अब उठ न सकेगी, उन्नति की पतवार।
जागें फिर हम सब महिलाएँ, करने को अपना उद्धार।।
स्वतन्त्रता के हेतु रहें, जीवन तक देने को तैयार।
कंटकमयी मार्ग काटें सब, किंचित् भी न रहे सुकुमार।।
जाग गयी अब हम महिलाएँ, करके नव जीवन स्वीकार।
नारी बिन अब उठ न सकेगी, उन्नति की पतवार।।

–कु० सन्तोष, कालका
(अंक २४/२, जून १९४५)

यह सोने का नहीं, जागने का अवसर है।

पराधीनता पीड़ित, भारत माँ का सुनकर क्रन्दन।
अब स्वाधीन उसे करने को, व्याकुल है मेरा मन।।
विश्वप्रेम की वीणा में, गा सत्य, अहिंसा गायन।
सोते विश्व हृदय में, भरदे, जागृति गायन मन-भावन।।
भैरव शंखनाद गूँजे, फिर वीरोचित जागे ललकार।
गुरुज्ञाये हृदयों में फिरसे, उठे गगनभेदी हुँकार।।
धधक उठे अन्तस्तल में, नव 'क्रान्ति' गीति की जयझंकार।
विह्वल, विकल, विवश पागल हो, नाच उठे संसार।।
चमक उठे हृदयस्थल में फिर आशा की ज्वाला साकार।
नस-नस में उद्दण्ड हो उठे, नवयौवन रसका संचार।।
तोड़ो बन्धन, छोड़ो गायन, तज दो सकरुण हाहाकार।
आगे है रणक्षेत्र और, फिर उसके आगे विजयोपहार।।
परिवर्तन में उठी हृदय में यही लहर है।
यह सोने का नहीं, जागने का अवसर है।।

–कुमारी तिलक जैन, कालका
(जैन महिलादर्श, अंक २५/३, जुलाई १९५६)

'अहिंसा पर आधारित स्वराज्य में लोगों को अपने अधिकारों का ज्ञान न हो तो कोई बात नहीं, लेकिन उन्हें अपने कर्तव्यों का ज्ञान अवश्य होना चाहिए।'

–म० गांधी-'पूर्ण स्वराज्य का अर्थ'

'व्यक्ति स्वातन्त्र्य जैन धर्म का उद्देश्य है और स्वावलम्बन उसकी प्राप्ति का मार्ग है।'

–स्व० पं० फूलचन्द सिद्धान्तशास्त्री
(एक विदेशी के प्रश्न के उत्तर में)

संदर्भ ग्रंथ सूची

१. आधुनिक जैन कवि, चेतना के स्वर, सम्पा०–जुगलकिशोर 'युगल', प्रका०–अखिल भारतीय जैन युवा फेडरेशन, शाखा–कोटा (राजे०) १९८६।
२. इतिहास की अमरबेल ओसवाल (प्रथम खण्ड), ले०–मांगीलाल भूतोडिया, प्रियदर्शी प्रकाशन, कलकत्ता, १९८८।
३. इतिहास की अमरबेल ओसवाल (द्वितीय खण्ड), ले०–मांगीलाल भूतोडिया, प्रियदर्शी प्रकाशन, कलकत्ता, १९९२।
४. उत्तरप्रदेश और जैनधर्म, सम्पा०–डॉ० ज्योति प्रसाद जैन, लखनऊ, १९७६।
५. कर्तव्य पथ प्रदर्शन, आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज, प्रका०–शैली श्री पार्श्वनाथ दि० जैन मंदिर, सब्जीमण्डी, देहली–११०००७, द्वितीय संस्करण,१९६३।
६. क्रान्तिकथायें, ले०–श्रीकृष्ण सरल, प्रका०– बलिदान भारती, १८, दशहरा मैदान, उज्जैन (म० प्र०), १९८५।
७. श्रीगोर्धनदास जैन अभिनन्दन ग्रन्थ, सम्पा०–डॉ० विश्वम्भर शरण आदि, प्रका०–श्री गोर्धनदास जैन स्वतंत्रता संग्राम सेनानी अभिनन्दन समारोह समिति, आगरा, १९६६।
८. गोलापूर्व जैन समाज : इतिहास एवं सर्वेक्षण, सम्पा०–सुरेन्द्र कुमार जैन, प्रका०–पारस शोध संस्थान, वर्णी वाचनालय भवन, कटरा बाजार, सागर (म०प्र०), प्रथम संस्करण १९६६ ई०।
९. गोलालारे जैन जाति का इतिहास, ले०–रामजीत जैन एडवोकेट, प्रका०–वीरसैन जैन सर्राफ, सदर बाजार, भिण्ड (म०प्र०), प्रथम संस्करण–१९६५ ई०।
१०. जैन जागरण के अग्रदूत, ले०– श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, १९५२।
११. जैन संस्कृति और राजस्थान, सम्पा०–डा० नरेन्द्र भानावत, प्रका०–सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर–३०२००३, १९७५–७६।
१२. जैन समाज वर्धा के सौ वर्ष (१८६५–१९६५), लेखक सम्पादक– श्री जमनालाल जैन, प्रकाशक– अध्यक्ष श्रीदिगम्बर जैन बोर्डिंग हाउस, वर्धा (महाराष्ट्र) १९६५।
१३ श्री दिगम्बर जैन खरौआ समाज का इतिहास, लेखक–रामजीत जैन एडवोकेट, गयेलिया जैन धर्मार्थ ट्रस्ट, ग्वालियर, १९६०।
१४. श्री दिगम्बर जैन बरैया समाज, लेखक– रामजीत जैन, प्रका०–मै० लालमणि प्रसाद जैन एण्ड सन्स, ग्वालियर, १९८७।
१५. दिवंगत हिन्दी-सेवी (प्रथमखण्ड), लेखक– क्षेमचन्द्र 'सुमन' शकुन प्रकाशन, नई दिल्ली, १९८१।
१६. दिवंगत हिन्दी-सेवी (द्वितीय खण्ड), लेखक– क्षेमचन्द्र 'सुमन' शकुन प्रकाशन, नई दिल्ली, १९८३।
१७. दिल्ली के स्वतन्त्रता सेनानी, भाग–२, सम्पादक–डॉ० श्रीमती मालती शर्मा (हिन्दी संस्करण), गजेटियर यूनिट, दिल्ली प्रशासन, दिल्ली।

१८. प्रमुख ऐतिहासिक जैन पुरुष और महिलाएँ, लेखक–डॉ० ज्योतिप्रसाद जैन, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली १९७५।
१९. पन्ना धाय, ले०–क्षमा शर्मा, प्रकाशन विभाग सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, १९९३
२०. परवार जैन समाज का इतिहास, सम्पा०–सिद्धान्ताचार्य पं० फूलचन्द्र शास्त्री, श्री भारतवर्षीय दि० जैन परवार सभा, १९९२।
२१. पल्लीवाल जैन जाति का इतिहास, लेखक– डॉ० अनिल कुमार जैन, श्री पल्लीवाल इतिहास समिति, अलवर (राज०) १९८८।
२२. पीयूष कलश (काव्य संकलन), ले०–सुन्दर देवी जैन, प्रका०–लोक चेतना प्रकाशन, जबलपुर (म०प्र०) १९७८।
२३. भारतीय इतिहास : एक दृष्टि, लेखक–डॉ० ज्योति प्रसाद जैन, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, १९६६।
२४. मध्यप्रदेश के स्वतन्त्रता संग्राम सैनिक, खण्ड –१ (जबलपुर संभाग), सूचना तथा प्रकाशन संचालनालय, मध्यप्रदेश, भोपाल, १९७८।
२५. मध्यप्रदेश के स्वतन्त्रता संग्राम सैनिक, खण्ड–२, (सागर संभाग), भाषा संचालनालय, मध्य प्रदेश, भोपाल, १९८३।
२६. मध्यप्रदेश के स्वतन्त्रता संग्राम सैनिक, खण्ड–३, (रायपुर, बिलासपुर, बस्तर संभाग), भाषा संचालनालय, संस्कृति विभाग, मध्यप्रदेश, भोपाल, १९८४।
२७. मध्यप्रदेश के स्वतन्त्रता संग्राम सैनिक, खण्ड–४ (इन्दौर, उज्जैन, ग्वालियर संभाग), भाषा संचालनालय, संस्कृति विभाग, मध्यप्रदेश, भोपाल, १९८४।
२८. मध्यप्रदेश के स्वतन्त्रता संग्राम सैनिक, खण्ड–५ (शिवा, भोपाल, होशंगाबाद संभाग), भाषा संचालनालय, संस्कृति विभाग, मध्यप्रदेश, भोपाल, १९८४।
२९. मन्दसौर जिले में स्वतन्त्रता संग्राम, डॉ० पूरन सहगल, प्रका०–मानव लोक संस्कृति अनुष्ठान, मनासा, जिला–मंदसौर (म०प्र०), १९८७।
३०. महिलायें और स्वराज्य, आशा रानी व्होरा, सूचना और प्रसारण मन्त्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, १९८८।
३१. रजत–नीराजना, सम्पा०–डा० परशुराम शुक्ल 'विरही', प्रका०–हरिनारायण चौबे, अध्यक्ष नगरपालिका, ललितपुर (उ०प्र०), स्वाधीनता रजत जयंती वर्ष (१९७२)।
३२. राजपूताने के जैन वीर, श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय 'दास', प्रका०–हिन्दी विद्या मन्दिर, पहाड़ी धीरज, देहली, १९३३।
३३. राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी, ले०–सुमनेश जोशी, टीपू सुल्तान, प्रका०–ग्रन्थागार, नारनोली भवन, सांगानेरी गेट, जयपुर–३, १९७३।

३४. विद्वत् अभिनन्दन ग्रन्थ, सम्पा०– डॉ० लालबहादुर शास्त्री, अखिल भारतवर्षीय दि० जैन शास्त्री परिषद्, बड़ौत (उ०प्र०), १९७६।
३५. विमल प्रसाद जैन : क्रान्तिकारी जीवन की कुछ झांकियां, ले०–रूपवती जैन, प्रका०–शकुन प्रकाशन, ३६२५, सुभाष मार्ग, नई दिल्ली–११०००२, प्रथम संस्करण, १९६४।
३६. सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा, ले०–मो० क० गाँधी, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद।
३७. सहारनपुर सन्दर्भ, सम्पा०–डॉ० के० के० शर्मा, प्रका०–सन्दर्भ प्रकाशन, गिल कालोनी (नारायणपुरी), निकट नारायण मन्दिर, सहारनपुर (उ०प्र०), १९८६।
३८. सांस्कृतिक चेतना और जैन पत्रकारिता, सम्पा०–डॉ० संजीव भानावत, सिद्ध श्री प्रकाशन, जयपुर, १९९०।
३९. स्वतन्त्रता संग्राम और जबलपुर नगर, ले०–रामेश्वर प्रसाद गुरु, प्रका०–स्वतन्त्रता संग्राम सैनिक संघ, जबलपुर (म०प्र०), १९८५।
४०. स्वातन्त्र्य सैनिक चरित्र कोष (मराठी) (खण्ड १ से ५), प्रका०–कार्यकारी सम्पादक व सचिव (स्वातन्त्र्य सैनिक चरित्र कोष), दार्शनिक विभाग, महाराष्ट्र शासन, २७ बरजोर भरुचा मार्ग, महात्मा गाँधी रोड, फोर्ट, मुम्बई–४००००१।
४१. स्वाधीनता आन्दोलन और मेरठ, ले०–आचार्य दीपंकर, जनमत प्रकाशन, ५४/४, जागृति विहार, मेरठ १९९३।
४२. स्वाधीनता आन्दोलन में शहडोल का योगदान, ले०सम्पा०– छेदीलाल सिंह, प्रका०–सुधीजन, इन्द्रकुंज, मानपुर, शहडोल (म०प्र०) प्रथम १९८८।
४३. अजमेर वार्षिकी एवं व्यक्ति परिचय १९७६–७७, प्रधान सम्पा०– श्री घीसूलाल पांड्या, प्रका० –आजाद प्रकाशन, पो०बा०नं० ८८, पृथ्वीराज मार्ग, अजमेर, (राजस्थान)।
४४. जैन प्रदीप (मासिक), आद्य सम्पादक–स्व० ज्योति प्रसाद जैन, सम्पा० श्रीकुलभूषण कुमार जैन, प्रका०–ज्योति चेतना संस्थान, चाहपारस देवबन्द (सहारनपुर) उ०प्र०।
४५. जैन महिलादर्श (मासिक), प्रका०–अ०भा०दि० जैन महासभा, श्री वेंकटेश्वर फ्लोर मिल्स, ऐशबाग, लखनऊ (उ०प्र०)।
४६. जैन सन्देश (साप्ताहिक), राष्ट्रीय अंक २३ जनवरी १९४७ ई० एवं अन्य अनेक अंक, प्रका०–भारतवर्षीय दिगम्बर जैन संघ, मथुरा (उ०प्र०)।
४७. नया खून, नागपुर (महाराष्ट्र) (पन्नालाल देवडिया श्रद्धाञ्जलि परिशिष्ट), २७ मई १९६०।
४८. मध्यप्रदेश सन्देश (स्वाधीनता आन्दोलन विशेषांक) १५ अगस्त १९८७, जन सम्पर्क संचालनालय, भोपाल (म०प्र०) ४६२००३।
४९. शोधादर्श (अनेक अंक), तीर्थङ्कर महावीर स्मृति केन्द्र समिति, उत्तर प्रदेश, लखनऊ।
५०. सन्मति (मराठी), पो०–बाहुबली, जि०–कोल्हापुर, महाराष्ट्र–४१६११०, दिसम्बर १९५२ ई०।